प्रेम पत्र

16-76

प्यारे दोस्त भुट्टो,
सलाम।

मैंने इस बार आपको कॉमरेड भुट्टो कह कर नहीं पुकारा क्योंकि मैं समझता हूं कि आपने हाल की पीकींग की घटनाओं के बारे में सुन लिया होगा।

आप जानते हैं कि ८० करोड़ चीन निवासी आजकल कुछ उथल-पुथल में लगे हुए हैं। जबसे चाऊ एन लाई का देहान्त हुआ तब से चीन के दो टुकड़े से हो गये हैं। अभी तो यही खबरें आई हैं कि कई सौ लोग गिरफ्तार हुए हैं, परन्तु कौन जाने कितने कई सौ हजार गिरफ्तार हुए होंगे। यह जानकर आपको अवश्य कुछ डर लगा होगा, यदि नहीं लगा, तो लगना चाहिये। आपसे यह बात छिपी नहीं कि चीनीयों का विश्वास लाल रंग के खून में सबसे अधिक है।

यह भी मैं जानता हूं कि आपके अमरीको मित्र 'श्री फोर्ड' आपकी हर सहायता करने को तैयार हैं। लेकिन आड़ा समय आने पर क्या वह आपको लाल रंग से बचा सकेंगे। कहीं ऐसा न हो की रावल पिंड़ी और इसलामाबाद के लोग भी लाल रंग पसन्द करने लग जायें।

यदि आपके मन में भारत पर फिर हमला करने के इरादे हैं तो यह सोचकर करियेगा की सरहद के इस पार अब श्री बन्सीलाल डटे हुए हैं। उनके नाम में भी लाल है और वह बहुतों की बन्सी बजा चुके हैं। कहीं इसबार सारी पाकिस्तानी फौज को हथियार न डालने पड़ जायें।

कुछ इधर बुरी नजर से देखने से पहले—माओ से जरूर पूछ लीजियेगा।

आपका
चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

मरने से नहीं डरते हम
पर कान हमारे कर लो बन्द
गोली की आवाज न आये
मरने पर जब जान ये जाये

आपके पत्र

अपना कीमती समय नष्ट न कीजिए, अपने दीवाने सुझाव हमें लिख भेजिये।

मैं कठपुतला हूं चित्त चोर, ये तो बात आप ने बिल्कुल ही सच लिखी है। चिल्ली तो सच में ही चितचोर है। बस एक अंक पढ़ के नहीं चुकता तो दूसरे के इन्तजार में बैठ जाता हूं। हम तो चाहते हैं कि दीवाना के पृष्ठ और बढ़ा दिये जायें जिससे कि पूरे सप्ताह हम उसे पढ़ते रहें। क्रिकेट कमेंट्री मजेदार रही। हम भारत वेस्ट इन्डीज़ की कमेंट्री सुनते-सुनते हंस पड़ते हैं क्योंकि दीवाना कमेंट्री की याद आ जाती है। आप राजेश खन्ना की जगह किसी हीरोइन का फोटो छापते तो बेहतर था। कृपया अगला अंक शीघ्र भेजें।

—विजय कुमार गर्ग, रामपुर

दीवाना का १२वां अंक हस्तगत हुआ, पढ़ कर बड़ा मजा आया, वाह-वाह। पैरोडी खाली चूर्ण बनाम कालीचरन बहुत अच्छी लगी। सारे मसाले मिलाकर पूरी चटनी यानि कि पूरा दीवाना अच्छा लगा। अंक ११ में कहानी मारे गए गुलफाम बहुत हास्यप्रद थी। अभी तो मैं स्वयं २३ वर्षीय अविवाहित युवक हूं, पर जब अपनी कन्या का विवाह करूँगा, तब आपके 'दुल्हन को विदाई करते समय रूलाने के फार्मूलों' को अवश्य आजमाऊँगा। सिलबिल-पिलपिल की अक्ल कब आयेगी।

—सुखदर्शन अरोड़ा, औटर्म लाईन, दिल्ली-९

दीवाना का नया अंक देखा। इसका तो हमने बहुत इन्तजार किया, सब्र का फल मीठा हो मिला। राजेश खन्ना का कलर फोटो बहुत ही पसन्द आया परन्तु पैरोडी और रोचक बन सकती थी। आपकी बुद्धि परखिये का पृष्ठ मजेदार होता है। कृपया उस प्रकार का और मसाला छापा कीजिये। आशा है दीवाना में आगे सदा हमारे दिमाग को तेज करने वाले और भी ऐसे आइडीयाज छपते रहेंगे। **—रीता झुनझुनवाला, रांची**

दीवाना का कठपुतली वाला अंक पढ़ा। मुख्य पृष्ठ बहुत ही रोचक रहा। गँजे सिरों पर मेंहदी रचना बहुत ही पसन्द आई। मैं इस गर्मी में आपके उपाय पर जरूर अमल करके देखूंगा। क्या सच ही फूल पत्तियों की सजावट हो जायेगी। सिलबिल पिलपिल बड़ा जोर का रहा। अब की पैरोडी में तो मजा ही आ गया। कृपया आगे भी ऐसी ही रचनाएँ छापते रहें। कालेज की छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं और साथ-साथ दीवाना की राह भी हम और उत्सुकता से कर रहें हैं।

—घनश्यामलाल रस्तोगी, मुर्शीदाबाद

दीवाना
अंक : १६, १५ से २१ अप्रैल ७६, वर्ष १२

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-१

चंदे की दरें--
छमाही : २५/- रु०
वार्षिक : ४८/- रु०
द्विवार्षिक : ९५/- रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद लघु कथाऐं लिख कर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा-सं०

गो० गं० लिमये

अपराधी भी अन्ततः मनुष्य होता है। अन्याय के कारण ही वह अपराधी है। वह सुधर सकता है। उत्तर-प्रदेश सरकार ने लखनऊ सेण्ट्रल जेल में जो सुधार अल्प-काल में किए हैं, यदि उनका अनुकरण अन्य प्रदेश भी करें तो आज के बन्दीगृह, बन्दीगृह न रहकर आदर्श कारागारबन जाएंगे। जिन बन्दियों का आचरण ठीक होता है, उन्हीं को इन कारागृहों में स्थान मिलता है—लोकसत्ता, रविवार, ता० ६-७-१९५२

उपर्युक्त समाचार पढ़कर मेरे मन में आशा की किरण उत्पन्न हो गई। यदि ये आदर्श बंदीगृह मेरे पेट की समस्या हल कर दें, तो कैसा बढ़िया रहे। मैं ७५ वर्ष का हो गया था और सरकार ने मेरी पेंशन निर्धारित की थी केवल साढ़े सात रुपये। इन मंहगाई के दिनों में भला साढ़ेसात रुपए में कैसे गुजर होती? भूखों मरने की नौबत आ गई थी। अतः मैंने इन विलासी बंदीगृहों का लाभ उठाने का निर्णय किया।

परन्तु बिना अपराध किए बंदीगृह में प्रवेश कैसे हो सकता था? जिसप्रकार बंदी कारागार से भाग जाते हैं, क्या उसी प्रकार मैं स्वतः 'स्मगल' कर (बेकायदा घुसकर) अन्दर पहुंच जाऊं? यदि प्रयत्न सफल हो गया तो ठीक ही है और यदि असफल रहा—किसी ने पहचान लिया कि यह बंदी नहीं है, जबरदस्ती कारागार में घुस आया है, तो भी 'ट्रेसपास' (अतिक्रमण) के अपराध में बंदी-गृह में भेज ही दिया जाऊंगा। परन्तु मेरी यह योजना पूर्णतः असफल रही। हुआ यह कि बंदियों की एक टुकड़ी बाग में फूलतोड़ने आई हुई थी। वहां पहुंचकर मैंने धीरे से एक बंदी से कहा, 'अरे तुझे यदि भागना हो तो मुझे अपनी डलिया दे और भाग जा। मैं तेरे स्थान पर बंदी बनकर कारागार में रह लूंगा।' पोशाक का प्रश्न ही न था, क्योंकि 'कैदियों की पोशाक पहनकर छाती पर नम्बर लट-काना स्वाभिमान के विरुद्ध और हीन-भाव उत्पन्न करने वाला' समझेजाने के परिणाम-स्वरूप बन्दियों को अपने ही वस्त्रों में घूमने दिया जाता था। परन्तु वह बंदी मेरे श्वेत केशों की ओर देखकर मुस्कराया और अपने साथी से बोला, 'इस बूढ़े पर बुढ़ापे की सनक सवार हो गई दिखती है।' उसका साथी बोला, 'पता है यह महाशय यहां कैसे आए थे? इसके भाई पर मुकदमा चल रहा था और वह जमानत पर छूटा हुआ था। तभी उसकी मृत्यु हो गई। उसी समय कारागारों में सुधार होने की सूचना इसे मिली। बस फिर क्या था, यह अपने मृत भाई की जगह न्याय-लय में उपस्थित हुआ। किसी ने इसे पह-चाना नहीं। अतः अब भाई की जगह दंड भुगतने के नाम पर यहाँ मजे कर रहा है।' इस सुखद मजेदार 'नौकरी' को छोड़कर उसे क्या अब भीख मांगनी थी? अतः बंदीगृही में बेकायदा घुसने की मेरी आशा समूल नष्ट हो गई।

अपराध किए बिना कोई मुझे बंदीगृह में लेने को तैयार न था। पर सत्तर वर्ष का बूढ़ा भला क्या अपराध कर सकता था? फिर भी मैंने एक सरल युक्ति सोचनिकाली। वर्षा हो रही थी। मैंने एक होटल में जाकर चाय पी और बिना पैसे दिए बाहर आने लगा। मेरा अनुमान था कि चाय देने वाला लड़का चिल्लाकर काउंटर पर बैठे मालिक को पुकारेगा और वह मुझे पकड़कर पुलिस के हवाले कर देगा। परनहीं। भीड़के कारण किसी का ध्यान मेरी ओर न गया। मैं द्वार पर कुछ देर मंडराता रहा कि कदाचित् अब लड़के का ध्यान मेरी ओर जाय, पर व्यर्थ। मानों मैं मनुष्य न होकर बिल्ली था। द्वार पर वर्षा के कारण भीगी छतरियों को रखने के लिए एक मिट्टी के तेल का खाली कनस्तर रख दिया गया था। उसे देखकर मुझे एक नई तरकीबसूझी। उसमें से एक छत्री उठाई और पुनः वहीं मंडराने लगा। कदाचित् इस बार ईश्वर ने मेरा प्रार्थना सुन ली। चाय पीते एक मवाली ने मुझे रोकते हुए कहा, 'काका-जी! यह छत्री तो मेरी है।' मैं अ[...] होटल-मैनेजर ने बीच बचाव किय[...] उस मवाली के रूखे खड़े बालों [...] उसकी छींट की बुशर्शट पर निगा[...] एक बार उस छतरी की ओर [...] मेरे दुपट्टे की ओर देखा और [...] डाला, 'यह छत्री इसी सभ्य सज्जन[...] मवाली क्रोध में बड़बड़ाता हुआ च[...] मैं बाहर आकर फुटपाथ पर रंग[...] मेरा विश्वास था कि वह चौराहे [...] सिपाही को लेकर आएगा। अतः [...] राज्य में विचरण करने लगा—पु[...] पकड़ ले जायगी, न्यायालय मुझे [...] और मुझे आदर्श कारागार के नं[...] रहने का अवसर मिलेगा। पर न[...] का पता था और न पुलिस का। [...] लगा कि शायद मवाली ने भी वह [...] से उठाई होगी, इसीलिए उसमें [...] पास जाने का साहस न था।

अब क्या करना चाहिए [...] युक्तियां एक के बाद एक मन में आ[...] यदि स्वयं पुलिस-स्टेशन पर जाक[...] चुराने की सूचना दूं तो? यही ठी[...] निकट के थाने में गया और हवल[...] अपने अपराध के सम्बन्ध में बताया[...] भाई, यह छतरी मैंने चुराई है....'

हवलदार ने पूछा, 'कहां से उ[...]

'बुलबुल सिनेमा' के सामने 'त[...] होटल में। उड़ाई नहीं है, चुराई[...] है। पर उधर ध्यान न देता हुआ व[...] वाही से बोला, 'तोता-मैना होट[...] क्षेत्र में नहीं है। गांजा-मारुति के [...] थाने पर जाकर रिपोर्ट करो।' [...] निर्विकार भाव से सामने की पान [...] की ओर चल दिया। 'पर मैं रहता [...] ही क्षेत्र में हूं?' इस स्पष्टीकरण [...] के लिए वह वहां था ही नहीं।

अजीब उलझन थी। वह चुर[...] रखना मेरे लिए असम्भव था। [...] मन में आया कि बीच बाजार में [...] पर खड़े होकर चिल्लाऊं, 'चोरी [...] आठ आना, आठ रुपये की छत्री [...] सिर्फ आठ आना।" तब तो पुलिस [...] लेगी। पर चोरी का माल कहने [...] खरीदने में हिचकिचाएंगे। और शा[...] के माल को इस तरह बेचना भी [...] से अपराध नहीं है। चोरी [...] रखने के अपराध में यदि पुलिस [...] भी लिया तो भी मैंने चोरी [...] यह कैसे प्रमाणित करूंगा? आजक[...] की प्रवृत्ति न पकड़ने की ओर

भी मुझे ही देना पड़ेगा। और फिर
कड़ भी ले, तो भी कोई न कोई
निकालकर छोड़ देने का स्वभाव
बन गया है क्योंकि कारागारों में
नहीं है। अतः यह विचार त्याग मैं
ारुति थाने की ओर मुड़ा और अन्दर
बोला, 'इंस्पेक्टर साहब। मैं एक
स्वीकार करने आया हूं। यह छत्री
ाई है।'

स्पेक्टर कुछ मुस्कराते हुए बोले,
? और यह छतरी चुराई है?
। गुरुजी! आप भले ही मुझे न
ं, पर मैं आपको पहचानता हूं। कोत-
 पास वाले स्कूल में दूसरी कक्षा में
जब मैं कमीज की बांह से नाक पोंछा
या, तब आप ही तो शिक्षक थे। और
कक्षा में एक दिन जब मैं चोरी-चोरी
रहा था तब आपने ही तो चांटा
ा। हवलदार, छतरी का हुलिया
ी—मास्टर साहब मजाक कर रहे
पको यह छतरी मिली कहाँ?'

मली नहीं भाई, आज ही चु-रा-ई है।'
ीरतापूर्वक बोला।

ह कैसे हो सकता है?' इंस्पेक्टर
बैठिए, मैं अभी समझाता हूं। चोर
र के होते हैं। एक सीधे-सादे गिरह-
र दूसरे जेंटिलमैन-डाकू। सीधा-सादा
ने के नीचे सोता है, फुटपाथ या
 रहता है और गर्दन मरोड़कर
ाम करता है। दूसरा, भोलेपन का
ने वाला डाकू मैरीन-ड्राइव के बंगले
ा है, अधुनातन पोशाक पहनकर
ॉयस में घूमता है। अपने को अलग
 में डाका डलवाना और स्त्रियों का
 कराना ही उसका व्यवसाय है।
े दुपट्टाधारी डाकू अभी तक तो मेरी
आए नहीं हैं। ऐसा डाकू भले ही
हसाब-किताब लिखकर अथवा झूठी
कर रुपया कमाए, पर यह छत्री या
ुराना उसके वश का नहीं है। अच्छा
यह छतरी आपको मिली कहां?'
ने कहा, 'पर मैं शपथपूर्वक कहता
.'

ने में हवलदार ने छतरी का पूर्ण
कर लिया था। वह बोला, 'हिरन-
ली डण्डी, मुड़ी हुई मूठ, और कपड़े
भ० प० अक्षर।'

पेक्टर हुलिया लिख रहे थे। 'ह०
अक्षर सुनते ही वे आश्चर्ययुक्त
ोले, 'अरे यही वह छतरी है जिसकी
सूचना पन्द्रह दिनपूर्व हरी भगवान
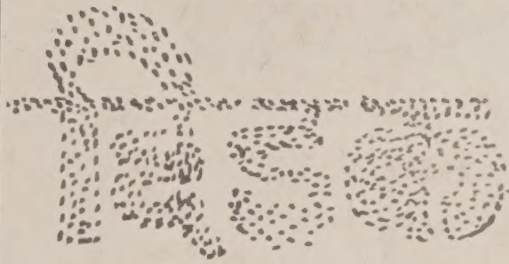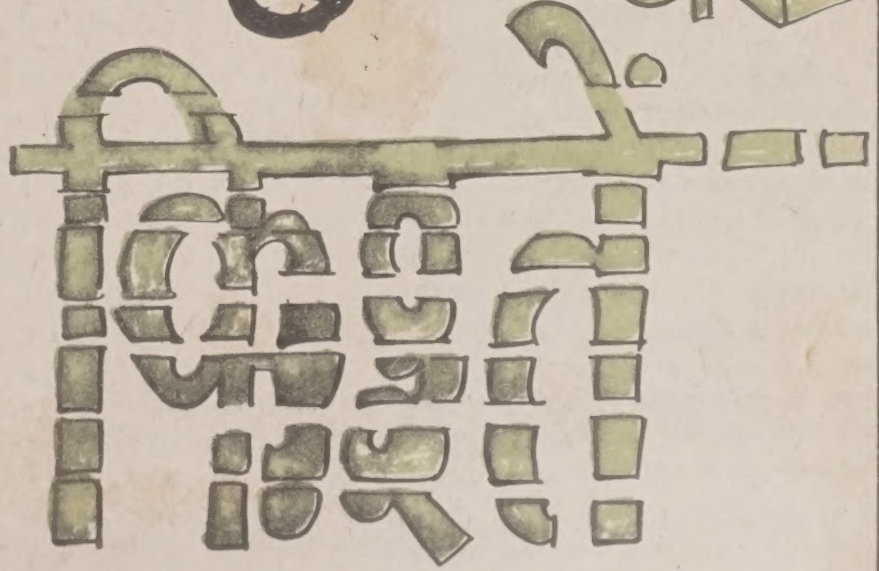
राकेश सचदेव—भाटापारा : अगर चाचा जी आपको महामूर्ख कह दें तो कोई अतिश्योक्ति तो नहीं ?

उ० : हम तो जनाब सब चीजें मिल बांट के खाते हैं। आप हमें जो भी कहना चाहते हैं उसमें से आधा यानि 'महा' हमें दे दें और बाकी का शौक से अपने काम में ले आयें।

याद के० सुगन्ध—रिवाड़ी (हरियाणा) : आपका जन्म स्थान किस गली में है ?

उ० : अपना जन्म किस गली में हुआ है ये तो पता नहीं पर हां हमारा चर्चा गली-गली में जरूर है।

गुलशन पामर—मुक्तसर (पंजाब) : प्यार का नशा कब उतरता है ?

उ० : दशा ज्यादा बिगड़ जाने के बाद।

प्र० : प्रेमी को अपनी गरीबी का एहसास कब होता है ?

उ० : अपनी प्रेमिका के साथ होटल से बाहर निकलते वक्त।

भरत प्रौडयाल—हेटौडा (नेपाल) : प्यार दीवाना होता है तो नफरत ?

उ० : नफरत तो दुनाली बन्दूक है—जिसकी एक नली तो दुश्मन की तरफ फायर करती है और दूसरी नफरत करने वाले की तरफ!

तरसेम खुंगर—अबोहर (पंजाब) : हमदर्दी से लाभ की जगह हानि कब होती है ?

उ० : जब हमदर्द बेवकूफ भी हो।

भीमसैन सिंगल—कृष्ण नगरी, अबोहर : जूता पालिश से चमकता है तो तकदीर ?

उ० : कई बार तकदीर जूते से चमकती है।

विश्व विजय वैरागी—हेटौडा, नेपाल : प्रेम की शुरुआत कैसे करूं ?

उ० : आप तो मेहरबानी करके सिर्फ प्रेम करें—बाकी शुरुआत करने वाले तो हर सड़क और हर गली में मिल जायेंगे।

इन्दर चन्द जैन—मुंगेली (म. प्र.) : आपको चाची कब नमकीन लगती है ?

उ० : जब वो दाल और सब्जी में नमक ज्यादा डाल देती है।

प्र० : आप कब हताश हो उठते हैं ?

उ० : जब हम ताश खेलने में हार जायें।

श्यामकुमार प्रेमी—जबलपुर अगर लड़कियां लड़कों को छेड़ने लगें तो ?

उ० : भला आजकल की लड़कियां जो कि ज्यादातर ककड़ियां होती हैं लड़कों को क्या छेड़ेंगी।

गुमनाम—गुमनामपुर : वक्त ने इन्सान को बदल दिया तो क्या इन्सान वक्त को नहीं बदल सकता ?

उ० : क्यों नहीं बदल सकता—अगर आपको वक्त बदलना हो तो आप एक अदद घड़ी ले लें और उसकी सुइयां जोर-जोर से घुमानी शुरू कर दें।

ओ. पी. मनमाना—मेरठ : हीरे की परख जौहरी करता है तो प्रेमिका की परख कैसे हो ?

उ० : बड़ा आसान तरीका है—आप अपनी प्रेमिका को किसी जौहरी की दुकान पर ले जायें। अब अगर वो वहां घुसने से इंकार कर दे तो समझ लो कि प्रेमिका परख में पास हो गई।

किशोरकुमार पमनानी—इंदौर : अगर प्रेमिका इशारों से बात न समझती हो तो ?

उ० : तो समझ लीजिये वो अकलमन्द बिलकुल नहीं है क्योंकि अकलमन्द को इशारा काफी होता है।

नीलू सच्चर—लुधियाना : चाचा जी, इस संसार में हर आदमी कोई न कोई मकसद लिए बैठा है क्या आप अपना मकसद बता सकते हैं ?

उ० : जी हां, क्यों नहीं बता सकते हैं—हमारा मकसद है मकसद की तलाश करना।

रमेश बी. साहू—अमरावती : चाचा जी आदमी जब मरता है तो उसके मुंह में जल क्यों डाला जाता है जबकि वह सारी जिन्दगी जल पीता है ?

उ० : बरखुरदार जल इस लिये डाला जाता है कि अगर कहीं उस मुर्दे में थोड़ा बहुत साँस बाकी हो तो उस पानी में बुलबुले उठ जायें और वह जिन्दा मुर्दा जलने या दफन होने से बच सके।

पाचू राम छिन्दी—फिरोजपुर छावनी : प्रेमिका का डैडी सपनों में कब आता है ?

उ० : जब उसका हाथ आप पर पहले से ही पड़ चुका हो।

विजय हरितवाल—थानारोड, तिनसुकिया : तुम्हें सूरज कहूं या चन्दा बोलो मेरे चाचा ?

उ० : 'सूरज में चमकते हम और चांदनो में बहकते हम'
यही है हमारा अफसाना।
बस कह दो हमें दीवाना।।

पपी (पतंगा)—फाजिलका : सुना है आप और चिल्ली अशोका होटल में खाना खाते हैं ?

उ० : जी हाँ आपने बिलकुल ठीक सुना है। हम और चिल्ली अक्सर अपना-अपना खाने का डिब्बा अशोका होटल ले जाते हैं और वहाँ की सीढ़ियों पर बैठकर खा लेते हैं।

होस्टेस

बसों में ही क्यों ? दिल्ली प्रशासन बसों में होस्टेसों की सेवायें शुरू कर रहा है। अब सवाल है कि बसों में ही क्यों? कई दूसरी जगहों में भी यह लाभदायी सेवा शुरू की जा सकती है। हमारे कुछ सुझाव पेश हैं। आपकी खोपड़ी में भी अगर कोई आइडिया कौंध जाता है तो आप भी लिखिये हमें।
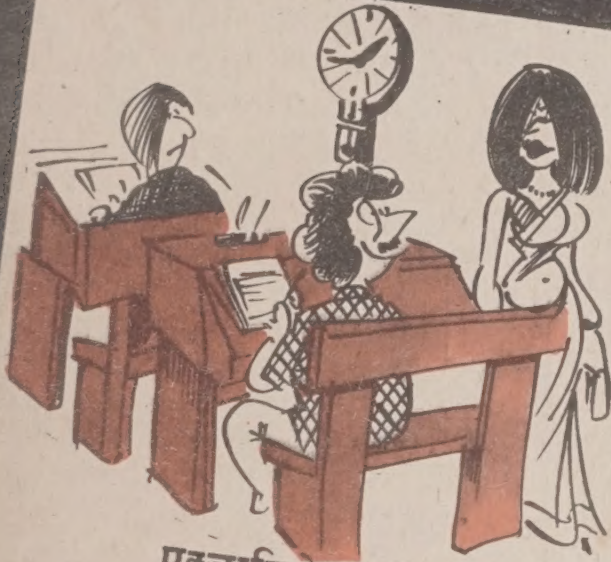
एक्जामिनशन-होस्टेस

परीक्षा हालों में भी इनविजिलेटरों के स्थान पर परिचारिकायें रखी जायें! एक बात तो निश्चित है कि परीक्षार्थी सुन्दर होस्टेसों को देखकर नकल करना भूल जायेंगे।

जेल होस्टेस

जेलों में भी संतरियों के स्थान पर होस्टेसें होनी चाहियें। कैदी भागने का कम ही यत्न करेंगे। चारों ओर हुस्न का जाल बिछा हो तो कैदी भागेगा कैसे ?

तांगा-होस्टेस

…गे वाले भी होस्टेसें रख कर अपनी आय में वृद्धि कर …कते हैं ज्यादा सवारियां आकर्षित करके। चित्र में तांगा …रिचारिका आवाज लगा रही है 'डलेट दो सवारी-डलेट दो सवारी।'

राशन-होस्टेस

राशन की दुकानों पर भी परिचारिकायें रखी जायें। क्यू में खड़े लोगों का समय भी गपशप में मजे से बीतेगा ही नहीं बल्कि अपनी बारी आने का लोगों को दुःख होगा।

सार्वजनिक जीवन

—प्र० के० अत्रे

प्रातः सात बजे का समय था। 'टाइम्स' पढ़ते हुए मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था। यह मेरा प्रतिदिन का कार्य-क्रम है। इतने में द्वार की घंटी बजी और नौकर मुझ से कहने आया, 'पांच-सात व्यक्ति आपसे मिलने के लिए आए हैं।'

इतनी सवेरी ये लोग दूसरों को त्रास देने के लिए क्यों आते हैं, इस भाव से मैंने नौकर की ओर देखा और 'उन्हें बैठक में बिठाओ' यह आदेश उसे कुछ तो शब्दों में और कुछ संकेत द्वारा दिया।

पांच मिनिट में मैं बैठक में गया तो देखा कि बैठक में पूरी भीड़ जमा है। पांच-सात की बजाय अच्छे-खासे नौ-दस आदमी बैठे हुए थे। किसी दूर के प्रदेश से वे लोग आये हुए थे और उनके साथ बम्बई के मेरे दो-तीन परिचित व्यक्ति भी थे।

मेरे अन्दर आते ही 'अभी-अभी जगे प्रतीत होते हैं?' उनमें से एक हास्यपूर्ण मुद्रा बनाने की चेष्टा करता हुआ बोला।

मैं चुप रहा।

'हमें लगा, पता नहीं आप इतनी जल्दी उठे भी होंगे या नहीं!' पहले व्यक्ति से कुछ अधिक मुस्कराता हुआ दूसरा व्यक्ति बोला।

उसे मुंहतोड़ जवाब देने का विचार तो क्षण भर के लिए मेरे मन में उठा, पर उसे वहीं दबाकर अत्यन्त शान्त स्वर में मैंने पूछा।

'क्यों, कोई विशेष कार्य है?'

'काम, आपके पास और कोई क्या काम हो सकता है?' तीसरा व्यक्ति और भी अधिक जोर से हंसता हुआ बाहर से आये हुए व्यक्तियों में से एक की ओर मुड़ा और उससे बोला, 'गणपतराव, तुम जो पत्र लाए हो, कहां है?'

गणपतराव ने अपने शरीर का एक भाग ऊंचा कर टेंट में लगे हुए एक गुड़मुड़ मटमैले रंग के कागज को निकाला और उसकी शिकन साफ करता हुआ तथा उसे अधिक शिष्ट रूप देते हुए उसने वह मेरे हाथ में रख दिया।

'रामभाऊ ने यह आपके लिए पत्र दिया है।' दूसरे एक व्यक्ति ने धीरे से स्पष्टीकरण किया।

पत्र के अन्त में टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में किए गए अस्पष्ट गुथे हस्ताक्षरों को अधमिचे नेत्रों से पहचानने की असफल चेष्टा करते हुए मैं बोला, 'रामभाऊ? रामभाऊ कौन?'

इस पर गणपतराव तुरन्त बोले, 'रामभाऊ कुलकर्णी, वकील। वह कहते थे आपकी और उनकी बड़ी गहरी दोस्ती है।'

'बम्बई आने पर आपके ही यहां उतरते हैं—' दूसरा बोला।

'कुछ दिन हुए उन्होंने अपनी पुत्री के विवाह पर आपको निमंत्रण भेजा था।' तीसरा बोला 'और आप आने वाले भी थे पर ऐन मौके पर कुछ गड़बड़ हो गई और आपने तार कर दिया कि आप आने में असमर्थ हैं। गाँव वाले बड़े निराश हुए थे।'

'अच्छा, अच्छा। तो आपके रामभाऊ कुलकर्णी वकील हैं। वही न जो लम्बे और गोरे हैं?' कुछ बोलना ही चाहिए, अतः मैंने कहा।

'लम्बे और गोरे?' गणपतराव बीच ही में बोला, 'नहीं जी, नाटे और काले हैं वह तो—आपके चेहरे से उनका चेहरा मिलता है—और उम्र में भी आपके ही बराबर हैं।'

'बिल्कुल।' गणपतराव का दूसरा साथी बोला, रामभाऊ को परसों ही त्रेसठवां लगा है।'

उस समय मेरा मन चाहा कि उस व्यक्ति की नाक जोर से काट खाऊं।

इतने में बम्बई वाला व्यक्ति आवश्यकता से अधिक कौतूहल प्रकट करता हुआ धीरे से फुसफुसाया, 'आपको कौन-सा लगा है—इकसठवां या बासठवां?' 'बावनवां—' मैंने शान्त स्वर में उत्तर दिया। उनके द्वारा वयसम्बन्धी यह विडम्बना मुझे बिल्कुल असह्य हो उठी थी।

'पर चेहरे से तो आप चालीस के भी प्रतीत नहीं होते। क्यों न शंकरराव?' एक दूसरे बम्बई वाले ने कुर्सी के हत्थे पर बड़ी कठिनाई से बैठे हुए एक अन्य व्यक्ति की पीठ पर थाप मारते हुए उसका मत पूछा। पर वह उत्तर देने से पूर्व ही कुर्सी के हत्थे पर से नीचे गिर पड़ा।

उधर ध्यान न देकर मैं मन ही मन सोचने लगा कि मेरा इतना घनिष्ट परिचित रामभाऊ कुलकर्णी कौन हो सकता है। पाठशाला में अथवा कालेज में पढ़े सभी सहपाठियों के तथा उसके बाद आजतक मिले कुलकर्णी नाम के सभी व्यक्तियों के चेहरे मैं मन के चित्रपट पर धीरे-धीरे सरका-सरका कर देखने लगा। पर उनमें त्रेसठ वर्ष का नाटा और काला रामभाऊ कुलकर्णी वकील मुझे कहीं दिखाई नहीं दिया। तब उस प्रयत्न को छोड़ मैं उनके लिखे पत्र को ही मन ही मन पढ़ने लगा। पहले तो सम्बोधन को पढ़कर ही मैं स्तब्ध रह गया, परमपूज्य देशकार्य—धुरंधर साहित्यमुकुट चिंतामणी भाऊसाहब के चरणों में...'

'भाऊ साहब।' दाल-भात में कंकड़ आ जाने की तरह मैं चिढ़कर बीच ही में रुक गया। 'भाऊसाहब कौन?'

'आपको वह भाऊ साहब कहते हैं—गणपतराव ने बीच में हंसकर स्पष्टीकरण किया।

'ठीक है।' मैं मन ही मन बड़बड़ाया। कहने को मैं सार्वजनिक सम्पत्ति ठहरा? अतः कोई भी मुझे किसी भी नाम से सम्बोधित कर सकता था—भाऊ साहब ही क्या दादा साहब भी कह सकता था।

मैं पुनः आगे पढ़ने लगा, 'हमारे गांव में प्रति वर्ष श्री कालमेख की यात्रा का उत्सव मनाया जाता है। आसपास के दस मील तक के दसबीस हजार व्यक्ति एकत्र होते हैं। ऐसे अवसर पर आप सरीखे महान् और विद्वान देश-भक्त के मुख से निसृत ज्ञानामृत का लाभ जनता को मिल सके, ऐसी सभी गांव वालों की इच्छा है। आप इस प्रदेश में कभी नहीं आए हैं। आपका यश हम अनेक वर्षों से सुनते आ रहे हैं। आपके दर्शन करने तथा आपका व्याख्यान सुनने के लिए यहां के

सम्पूर्ण जनता चक्रवाक् पक्षी के समान आप की प्रतीक्षा में आंखें बिछाए हुए है। यदि आप न आए, तो सहस्रों व्यक्तियों को निराशा होगी। अतः इस अवसर पर पधार कर हमें कृतार्थ कीजिए। इस अवसर पर एक निःशुल्क वाचनालय और एक व्यायाम-शाला खोलने का हम लोगों का विचार है तथा प्रबंधक-मंडली का आग्रह है कि वाच-नालय का उद्घाटन तथा व्यायामशाला के भवन का शिलान्यास आपके कर-कमलों द्वारा ही हो। आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लेंगे, इस आशा से हमने आपका नाम अपने विज्ञापन-पत्रों एवं समाचार-पत्रों में प्रकाशित कर दिया है, इत्यादि, इत्यादि।'

पत्र पढ़ते समय मुझे बुलाने को आए 'ग्राम-मंडल' के वे पांच-सात प्रतिनिधि अत्यन्त दीन मुद्रा में मेरे मुख की ओर देखते रहे।

पत्र पढ़कर मैं उसे मेज पर रख ही रहा था कि गणपतराव चिपटाऊ ढंग से बोले, रामभाऊ ने मुझ से कहा है कि उनका पत्र पढ़ने के उपरान्त भाऊ-साहब अस्वीकार कर ही नहीं सकेंगे—'

'मेरा नाम भाऊ साहब नहीं है' मैंने बीच ही में शुद्धि की।

'जो भी हो, वही सही।'—गणपतराव दांत निकाल कर जोर से हंसने का प्रयत्न करते हुए बोले।

'अगले सोमवार से उत्सव प्रारम्भ होगा' दूसरे एक सज्जन बोले।

'और शनिवार को समाप्त होगा। छः दिनों में से आप किसी भी दिन आ जाइएगा।'

'नहीं-नहीं, किसी भी दिन कैसे ?' तीसरे सज्जन रोष-भाव बनाते हुए बोले, 'उत्सव के पहले ही दिन साहब का व्याख्यान हमने रखा है। उसी दिन भारी भीड़ जमा होगी। बाद में भीड़ कम हो जाने पर साहब को ले जाने से क्या लाभ ?'

वह हाथों को मटकाकर कुछ और कहने वाला था, पर किसी तरह उसने अपने आपको रोका। मैंने भी मुक्ति का निश्वास लिया।

'गांव वालों ने तो हमसे स्पष्ट कह दिया है कि यदि साहब नहीं आए तो हमें किसी अन्य का व्याख्यान नहीं सुनना है। होंगे दूसरे अनेक व्याख्याता—भाड़े के टट्टू। उनको लेकर हमें क्या चाटना है ?' चौथे साहब बोले।

'गत वर्ष पूना के शनिवार-वाडे के सामने साहब का व्याख्यान था। कितनी भीड़—कितनी बड़ी भीड़ थी। मैं वहीं था न ! देखने योग्य सभा थी—कुछ याद नहीं आ रहा।' सिर खुजाते हुए पांचवां बोला।

अब यदि किसी को कुछ और कहना है तो वह भी कह डाले, 'इस भाव से मैंने चारों ओर दृष्टि घुमाई। पर मुझे ऐसा लगा जैसे अब सब लोग मुझ से कुछ बोलने की आशा कर रहे हैं। बोलने का अवसर प्रदान करने के लिए मन ही मन उनका आभार मानते हुए मैं बोला, 'आप लोग अपने रामभाऊ कुलकर्णी वकील से कह दें कि उन का पत्र मिला। मैं आभारी हूं। पर व्यस्तता के कारण आने में असमर्थ हूं—मुझे क्षमा करें।'

इस पर उन सबके चेहरे ऐसे हो गए जैसे उन पर छत ही गिर पड़ी हो और वे एक दूसरे की ओर बड़ी दुखपूर्ण मुद्रा में देखने लगे।

बम्बई के एक सज्जन बोले, 'नहीं, नहीं—साहब, यह,···यह नहीं हो सकता। हमारी खातिर आपको 'हाँ' करनी ही पड़ेगी।'

दूसरे सज्जन बोले, 'हमने तो इन सबसे कह दिया है कि साहब भले ही दूसरों से कुछ कह दें, पर हम तो उन्हें हाथ पकड़ कर लिवा लायेंगे।'

'कार्य-व्यवस्तता तो साहब आपको सदा ही रहेगी।' तीसरे सज्जन बोले 'पर एक दिन का समय तो आपको निकालना ही पड़ेगा। शहर के लोगों को तो आपका व्याख्यान सदा ही सुनने को मिल जाता है। एक दिन यदि वे नहीं भी सुनेंगे, तो भी कोई विशेष हानि नहीं होगी। गांव के लोगों के लिए इतना कष्ट तो आपको झेलना ही चाहिए—'

'यह सब ठीक है।' मैंने मुंह बनाते हुए कहा, 'पर इस महीने तो बम्बई से बाहर जाने का मुझे तनिक भी अवकाश नहीं है। अब बताइये, मैं क्या कर सकता हूं ?'

'आपने तो यह कहकर हमारी कमर ही तोड़ दी।' अपने ग्रामीण साथियों की ओर देखते हुए गणपतराव बोले। सबने उनका समर्थन करते हुए कमर टूटने का अभिनय किया 'इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम अपना मुंह भी गाँव वालों को नहीं दिखा सकते। गांव में पैर रखते ही लोग हमारा मुंह तोड़ देंगे।'

'भगवान के लिए ऐसा न करें, साहब।' दूसरा एक व्यक्ति पैरों पड़ने का अभिनय करता हुआ बोला, हम एक दिन से अधिक आपका समय नहीं लेंगे। आप रविवार की रात को दस बजे यहाँ से चलिएगा, सोमवार को प्रातः दस तक आप हमारे गांव पहुंच जायेंगे। खाना खाने के बाद दो घंटे आराम कीजिएगा। संध्या को आपका व्याख्यान होते ही हम साढ़े सात की गाड़ी में आपको बिठा देंगे और इस प्रकार मंगलवार को आप प्रातः सात बजे लौट आयेंगे।'

'यदि आप कहें, तो स्पेशल मोटर से आपको ले जाने की व्यवस्था भी हम कर सकते हैं।' तीसरे सज्जन ने सुझाव दिया।

'विमान की सुविधा होती, तो हम

आपको विमान द्वारा ले जाते।' चौथा हंसते हुए बोला और सबने जोर से हंसकर उसका समर्थन किया।

'कुछ भी हो, आपको हम ले जायेंगे अवश्य।' समय पर आते ही गणपतराव ने अपनी जांघ पर जोर से थाप मारी।

इतने में द्वार की घंटी जोर से बजी। और दो सज्जनों को लेकर नौकर अन्दर आया।

बैठक में बैठे हुए व्यक्तियों की ओर उदासीन होने का यह सुन्दर अवसर है, इस भावना से मैंने आगन्तुक व्यक्तियों में से एक को आंख से इशारा करते हुए पूछा, 'क्या है, कैसे आए?'

'अब की बार गणपति-उत्सव में आपका कार्यक्रम हो, ऐसी हमारी चाल के सब व्यक्तियों की इच्छा है।' वह कहने लगा।

उसे बीच में ही रोकते हुए मैंने कहा, अरे। गणपति-उत्सव के अभी बहुत दिन हैं। देखा जाएगा। किसी दिन मुझसे कार्यालय में मिल लेना अथवा पत्र डाल देना।'

इस पर वह सज्जन चुपचाप नमस्कार कर चले गए। पर उसके साथ आया हुआ दूसरा व्यक्ति वहीं का वहीं रुक गया। मैंने आश्चर्य से पूछा, 'कहिए, आपका क्या काम है?'

तब वह व्यक्ति आधे आंत निपोरते हुए बोला, 'परसों, मैं आपके लिए एक पत्र छोड़ गया था। आपने पढ़ लिया होगा। आज हमारे क्लब में नाटक है। आप उसके अध्यक्ष हैं, यही याद दिलाने के लिए आया हूं।'

'आपके क्लब के नाटक का मैं अध्यक्ष हूं?' चक्कर-सा आने के कारण आंखें मींचता हुआ मैं बोला, 'मुझे तो पता तक नहीं है।'

'आपका उत्तर नहीं आया, अतः हमने समझ लिया कि आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है।' उन सज्जन ने बड़ी सरलता से चाल चली।

'देखिए महाशय, न मुझे आपके क्लब का पता है और न नाटक का' मैं चिढ़कर बोला, 'इसके अतिरिक्त आज रात को मुझे अवकाश भी नहीं है।'

'पर आपके न आने से लोगों को बड़ी निराशा होगी।' वह व्यक्ति बीच ही में ढिठाई से बोला।

'होने दो लोगों की निराशा—'मैं पीछे न हटता हुआ बोला, 'यह आवश्यक थोड़े ही है कि लोगों की सदा प्रत्येक आशापूर्ण ही हो।'

'पांच मिनिट को भी आप आजायेंगे, तो हमारा काम चल जाएगा।' उन महाशय ने अन्तिम तुर्प चलाई।

उनसे अधिक तर्क करने में कोई लाभ नहीं, यह सोचकर मैं बोला, 'ठीक है। नाटक के मध्यावकाश में थोड़ी देर के लिए चला आऊंगा।'

वह सज्जन प्रसन्न होकर चले गए। मैं सामने देखने लगा।

दो संकट तो मैंने किसी न किसी तरह टाल दिए, परन्तु कालभैरव के उत्सव का जो संकट पहले से ही मुझे घेरे हुए था, वह नहीं टल रहा था। वह तो गले की फांसी ही हो गया था।

'फिर हमारे विषय में आपने क्या?' गणपतराव ने अपना तगादा पुनः आरम्भ कर दिया।

'अरे, इन्हें निश्चय क्या करना है? निश्चय तो आपको ही करना है।' एक बम्बई वाले ने मेरी ओर से उत्तर दे डाला।

'साहब को ले जाने के लिए रविवार को किसी आदमी को भेज देना और उन्हें ले जाना।' दूसरे बम्बई वाले ने उसका साथ दिया।

'चलो, उठो।' तीसरा बम्बई वाला और भी आगे बढ़कर बोला, 'साहब को हजार काम हैं, व्यर्थ माथापच्ची के लिए उनके पास समय नहीं है। अब उनका अधिक समय नष्ट क्यों करते हो—'

इस पर सब एक साथ उठ खड़े हुए।

गणपतराव बोले, 'अच्छा तो हम आज सांयकाल को चले जायेंगे और इस किशू को यहीं रहने देते हैं, आपको लिवा जाने के लिए।'

'तुम लोग निश्चिन्त होकर जाओ। मैं साहब को जरूर ले आऊंगा।' स्वयं सेवक जैसी खादी की मटमैली पोशाक पहने, पिचके गालों वाला किशू बड़े उत्साह के साथ बोला।

इस प्रकार मेरे निकलने का कोई रास्ता उन्होंने नहीं छोड़ा। बैठक से जाते-जाते उनमें से एक व्यक्ति कुछ याद आ जाने की मुद्रा बनाते हुए पीछे मुड़कर बोला, 'और हां साहब, हमारे गांव के बालकों ने बंगाल-फंड के लिए आपके एक नाटक का अभिनय करने का निश्चय किया है।'

'अरे, तो उसकी अनुमति मांगने की भी कोई आवश्यकता है?' बम्बई वाले ने बोलने का वह अवसर भी हाथ से न जाने दिया।

'साहब ने अपने नाटकों के अभिनय की अनुमति संसार-भर के बच्चों को दे रखी है—'

उसकी ओर ध्यान न देता हुआ मैं शान्तिपूर्वक बोला, 'अनुमति के लिए आपको पच्चीस रुपये देने होंगे—'

'पर बंगाल-फंड के लिए नाटक खेल रहे हैं, साहब।' पहला व्यक्ति बोला।

'बंगाल-फंड की मैंने पहले ही सहायता कर दी है। आपको करनी है, तो खुशी से करिए, उसके लिये मेरी जेब पुनः क्यों काटते हैं?' मैं कुछ चिढ़कर बोला।

इतने में आगे चले गये गणपतराव पुनः पीछे लौट आये और बोले, 'ऐसा करिए साहब, इस बार आप हमें निःशुल्क अनुमति दे दें, यदि फिर कभी हम आपका नाटक खेलेंगे तो पच्चीस क्या, पचास रुपये आपको भेंट में दे देंगे।'

'हाँ, साहब।' शेष सभी ग्रामीणों ने 'कोरस' में उसकी बात का समर्थन किया।

'अच्छा, तुम कहते हो तो—'

होठों ही होठों में बुदबुदाया। कालभैरव वाले बड़े खुश होकर मुझे नमस्कार कर चले गए।

'टाइम्स' का पढ़ना ज्यों का त्यों रह गया। साप्ताहिक लेख लिखने का मैंने उस दिन निश्चय किया था, पर प्रातःकाल का सारा समय इस प्रकार नष्ट हो गया। 'जनता' को मन ही मन गाली देता हुआ मैं अपने विचारों के सूत्र एकत्र करने लगा, तभी डाकिये ने द्वार खटखटाया। एक मनीआर्डर आने वाला था, अतः आशा में मैंने द्वार खोला। पर डाकिया न मनीआर्डर लाया था और न पत्र। मैंने पूछा 'क्या है?'

बड़े प्रेमल स्वर में वह बोला, 'आज उस सिनेमागृह में आपका नाटक लगा है। पास चाहिए था।'

'कितने आदमियों का?' मैंने निर्विकार मुद्रा में प्रश्न किया।

'चार' हाथ की चार अंगुलियों द्वारा उसने उत्तर दिया। मेज पर पड़े कागज की एक चिट फाड़कर उस पर मैंने जल्दी से लिख दिया 'चार व्यक्तियों का पास' और और उसे डाकिये के हाथ में थमा कर दरवाजा इतने जोर से बंद किया ताकि वह मेरी अप्रसन्नता समझ जाय। डाकिये को कैसा लगा, पता नहीं क्योंकि द्वार बन्द हो जाने से मैं उसका चेहरा नहीं देख पाया।

रविवार आने में अधिक दिन नहीं लगे। किशू ने सुबह से ही डेरा डाल दिया। संध्या को बाहर जाना है, इस विचार से
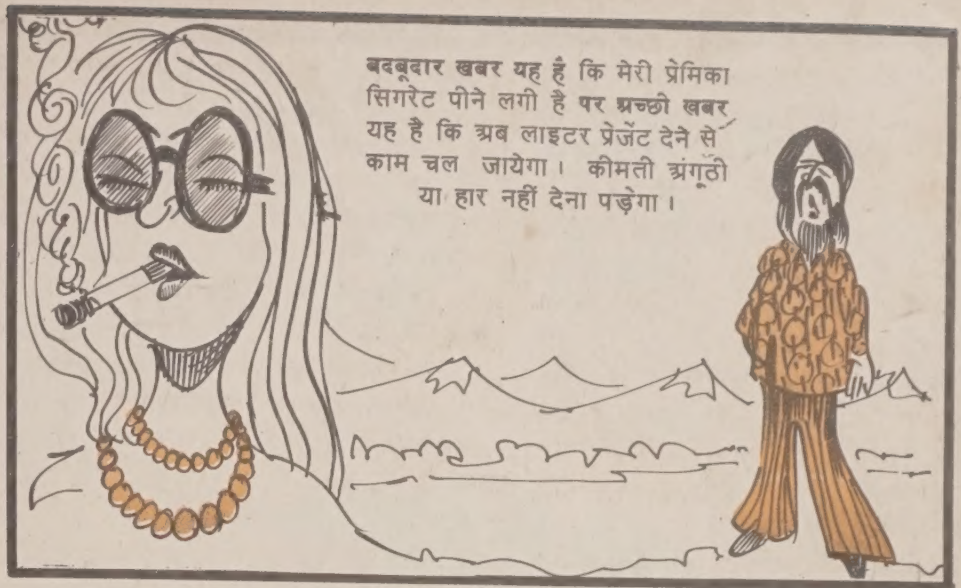
(शेष पृष्ठ २४ पर)
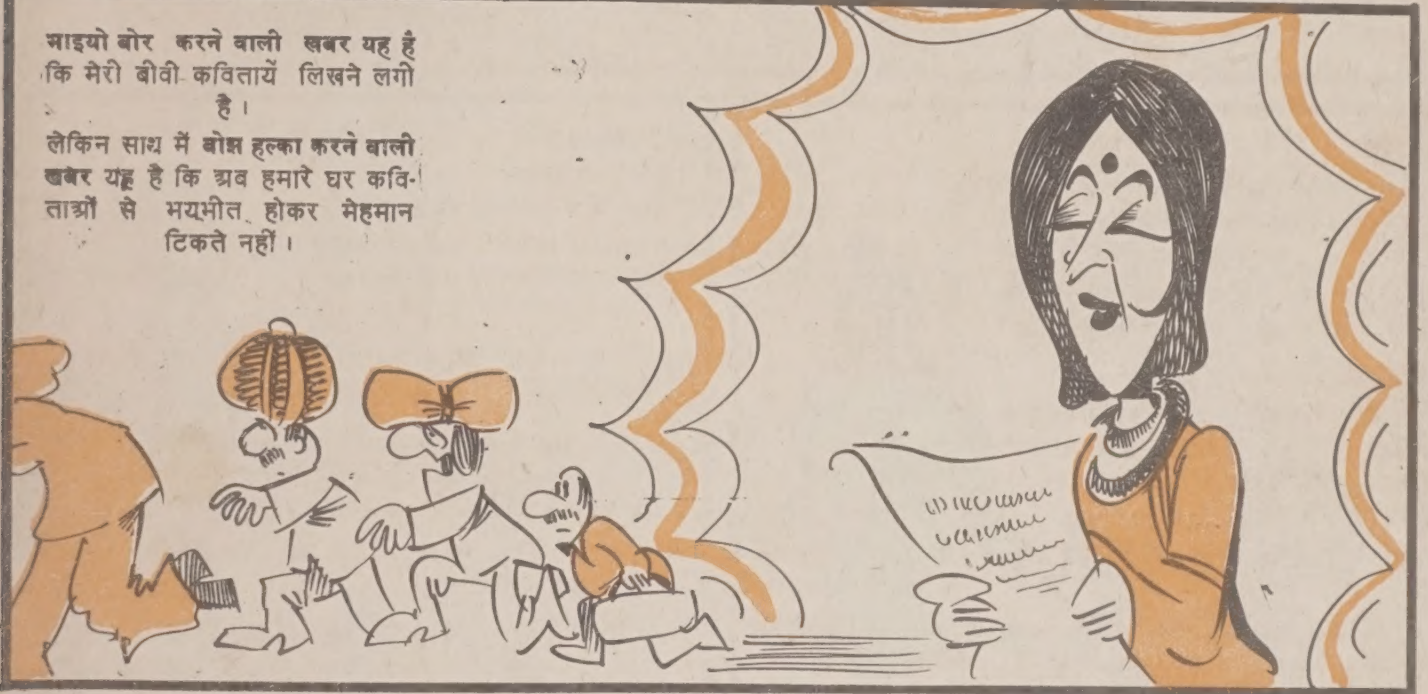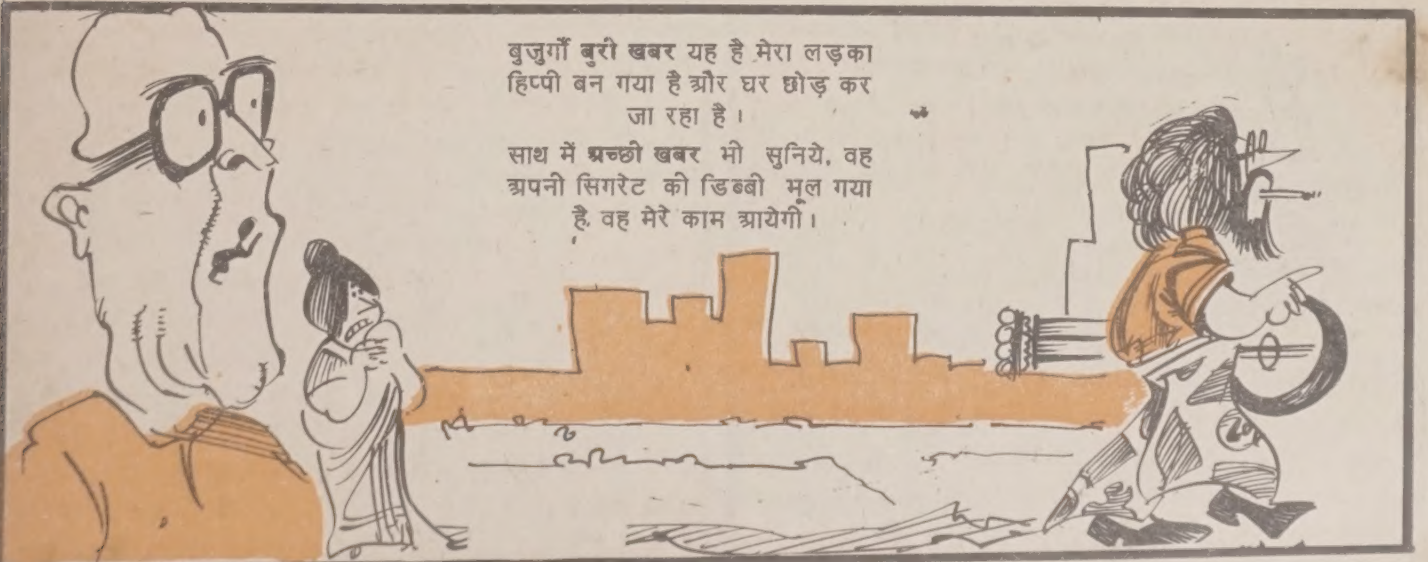
अच्छी खबर बुरी खबर

कुत्ता प्रेमियों अच्छी खबर यह है कि मेरा मौंगरेल कुत्ता झुमरु कुत्ता प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार यह कप जीता है।
बुरी खबर यह है कि झुमरु के रखरखाव, देखभाल में हमारा घर व सारा समान बिक गया है। हमारे पास यह कप रखने तक के लिये जगह नहीं है।
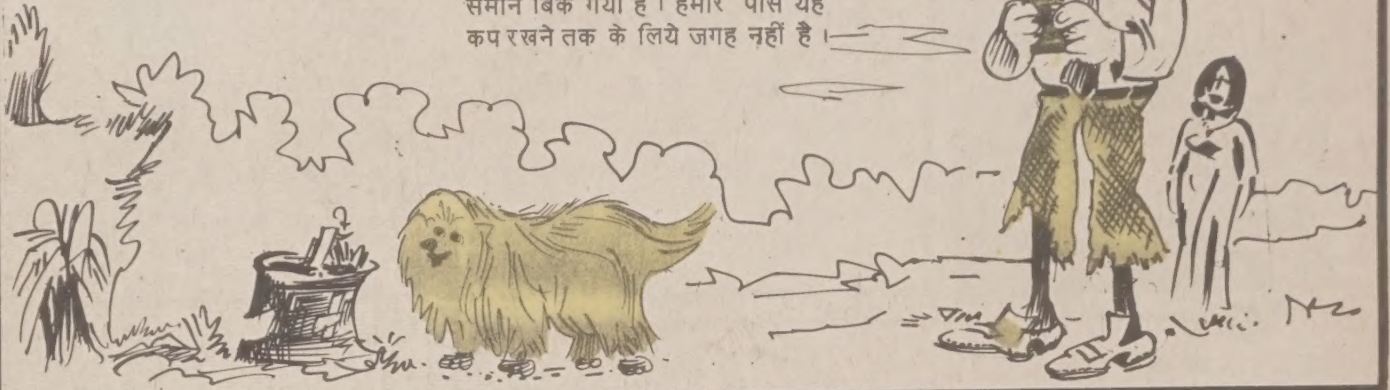
प्रेम भरी खबर यह है कि मैंने पत्नी को उसके मरने पर दूसरा ताजमल बनाने का वादा किया है
पर प्रेम भावना कुचलने वाली खबर यह है वह कहती है कि मुझे मारकर ही मरेगी।

थी चियर्स ऐवरी बाडी ऊंचे लक्ष्यों वाली अच्छी खबर यह ई कि मैंने दहेज न लेने का निश्चय किया है।
पर मेरे निश्चय पर पानी फेरने वाली बात यह है कि सभी लड़कियों ने मुझसे विवाह न करने का निश्चय किया है।

जोरदार खबर यह है कि सरकार गरीबों को मुफ्त प्लाट बांट रही है
और बुरी खबर यह है कि मैं एक गरीब लेखक हूं। मुझे कहानी का प्लाट चाहिये, जमीन का नहीं।
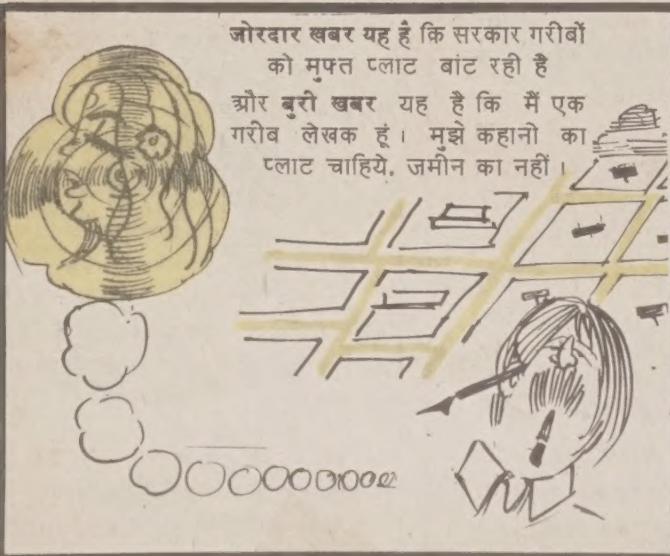
दुनिया वालो अच्छी खबर सुनो मेरा लड़का हायर सैकेण्ड्री पास हो गया है
साथ में पसीने छुड़ाने वाली बात यह है कि मुझे उसे कालिज में एडमिशन दिलाने के लिये दर-दर की ठोकरें खानी पड़ेंगी।

मैन, टैरीफिक न्यूज यह है कि मेरी गर्लफ्रैंड मोना ब्यूटी कंटेस्ट जीत गयी है।

पर दिल दुखाने वाली सैड न्यूज यह है कि लोग मुझे उसका चमचा समझने लगे हैं। कई लोग नौकर समझ बैठते हैं।

इरशाद दिलकश—पानीपत

अपनी पत्नी का सैक्स डाक्टर से चेंज करवाइये फिर उसे भैय्या कहकर बुलाना होगा।

मैं खूबसूरत और वफादार महबूबा की तलाश में हूं, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

दिलनवाज—लखनऊ

सौ रुपये के नोट की गंध वाला लोशन प्रयोग करें।

मैं १६ वर्षीय नवयुवक हूं। मुझे एक लड़की से प्रेम हो गया है लेकिन मैं जिस लड़की को चाहता हूं वह मुझे नहीं चाहती। जब वह मेरी तरफ देखती है तो मुझे लगता है जैसे वह मुझे कच्चा ही खा जायेगी। मुझे उससे डर भी बहुत लगता है फिर भी मैं उसे चाहता हूं और उससे शादी करना चाहता हूं आप ही कोई उपाय बतायें।

हरजीत सिंह—पंजाब

जब वह आपको देख रही हो तो उबलते पानी की डेगची में चढ जाइये वह आपको पका हुआ खायेगी।
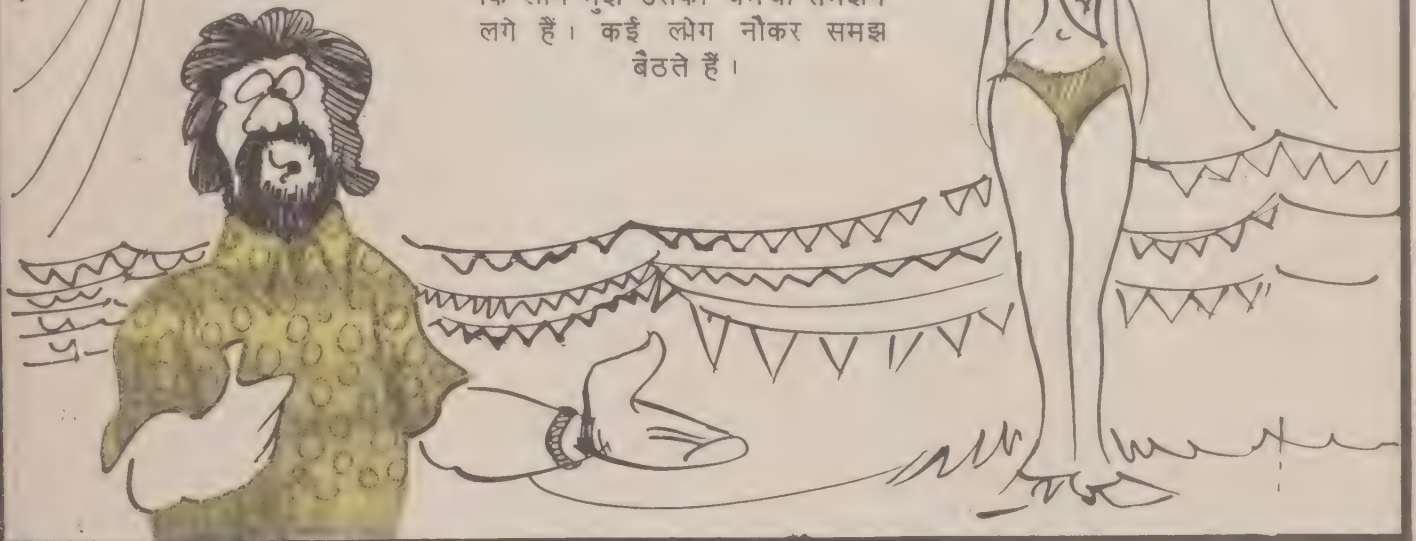
मैं करीब १२ साल से अच्छी तरह से बोल नहीं पाता हूं। अब मेरा आयु २० वर्ष है। मैं जब बात करता हूं तो सुनने वाले हसन लगत हैं।

रामकृष्ण हांडा—काठमांडो

जल्दी शादी कर लीजिए बोलने की बारी ही नहीं आयेगी।

मैं १६ वर्षीय हाई स्कूल का छात्र हूं। इधर अचानक मेरे जीवन में एक लड़की आ गई और उसने मेरे साथ फ्रेंडशिप कर ली। लेकिन एक दिन अचानक...

हालत की तलखियों से मैं घबराकर मिल गया
बहके हुए ख्यालों से टकराकर मिल गया।
मिलन ? का तो ख्याल न था फिर भी क्या करूँ?

इरशाद अली—लखनऊ

किसने आपको सूचना दी कि गंगा का पानी सूख गया है ?

मैं एक लड़की से प्यार करता था और हम दोनों ने शादी के पक्के वादे किए थे मगर, किसी कारणवश हमारी शादी नहीं हो सकी। मेरी किसी और से शादी हो गई और उसकी और किसी से। मगर अब जब भी वह मेरे घर आती है तो मेरी पत्नी को भाभी कह कर पुकारती है। मैं मुसीबत में हूं मेरी समस्या हल कीजिए ?

हवाई अड्डे से जहाज उड़ने में अभी देर थी।

एक मुसाफिर पायलट के पास जाकर कहने लगा, क्यों पायलट साहब, जहाज तो ठीक है न ?'

'जी हां।'

कुछ मिनट बाद मुसाफिर ने फिर पूछा, 'तेल तो पूरा डलवा लिया है न ?'

'जी हां।'

कुछ देर बाद मुसाफिर ने पायलट को फिर टोका। इस बार उसकी आवाज से परेशानी ज्यादा झलक रही थी, भाई साहब, आपने इंजिन अच्छी तरह देख लिया है न ?'

पायलट कुछ झल्ला गया, 'आप बेफिक्र रहिए। यह देखना हमारा काम है।' फिर मुसाफिर के चेहरे पर शिकन देखकर पायलट

●

पत्नी ने बड़े गर्व से पति से कहा, 'यह घर मेरे पिता की बदौलत है, ये फर्नीचर, ये कपड़े, ये गहने, ये बर्तन सब उनके दिए हुए हैं। तुम्हारा है ही क्या यहां ?'

रात को घर में चोर घुसे। पत्नी ने पति को जगाया। पति यह कह करकि 'मेरा इस घर में है ही क्या ?' करवट बदल कर सो गया।

●

पति—'मैंने अभी-अभी सपने में देखा है कि मुझे एक जगह नौकरी मिल गई है।'
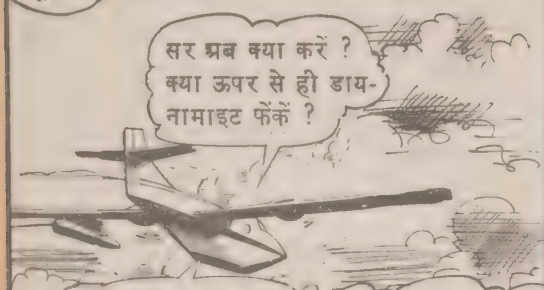
पत्नी—'इसीलिए तुम थके-मांदे नजर आ रहे हो।'

तुम सब इस समय मेरे कैदी हो··· बाकी की पूछ-ताछ बाद में···

तो क्या उस जहाज में लुआगा खुद आया है ।

अरे, खुशकिस्मती से वह अभी ऊपर ही है, उसे तोप से नीचे गिरा दो ।
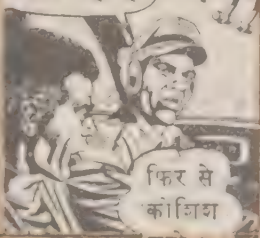
कोई जरूरी नहीं है··· कि वह हमारे सन्देश का कोई जवाब दें ।

अब हम क्या करें ?

अगर हम पहले विस्फोट नहीं कर सकते तो जहाज को नीचे उतारने की कोशिश करो

राष्ट्रपति लुआगा टी के हैड क्वाटर पर

सर, मैं धमाका किए बगैर जहाज को नीचे उतारने की कोशिश कर रहा हूं···

हां ठीक है क्योंकि डायनामाइट लगा हुआ है इसलिये बगैर धमाके के जहाज को नीचे उतरना ही अकल मन्दी होगी।
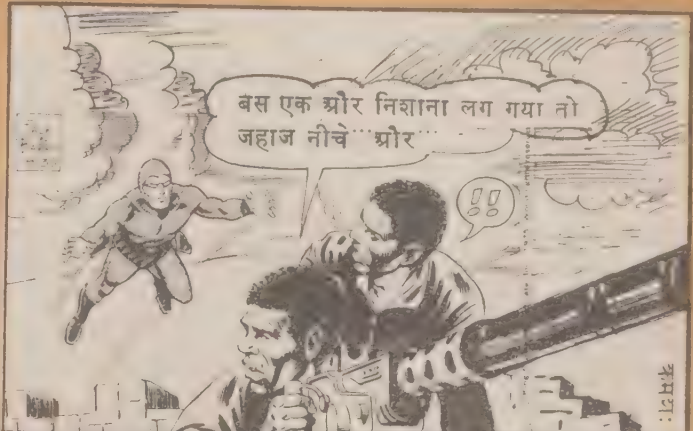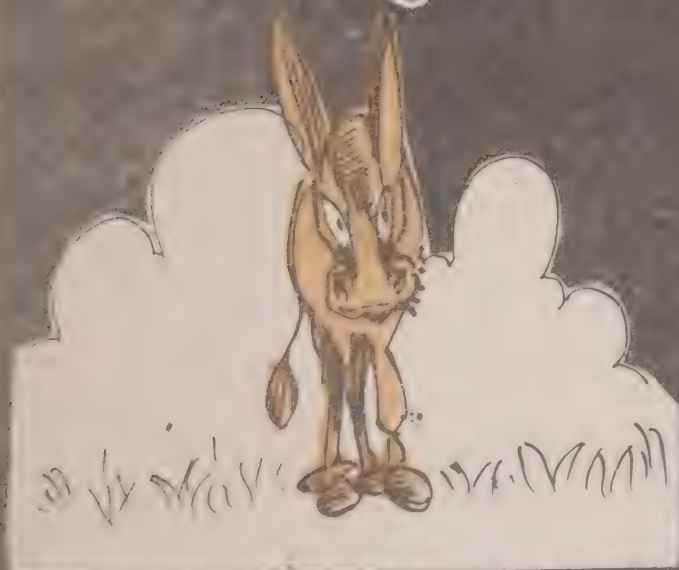
मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो बेवकूफों को गधा पुकारते हैं—ठीक है किसी गधे ने आज तक पी. एच. डी. नहीं की, लेकिन हम कोई और जानवर बताइये जिसने पी. एच. डी. की है ?

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो जी हजूरों को चमचा कह कर पुकारते हैं। हमने क्या किया है ? उनको लोटा, थाली कह कर नहीं बुलाया जा सकता ? यह भेद भाव क्यों ?

'हाँ तो पुष्पाजी, क्या ग्राप उन ग्रनुभूतियों का बताना पसन्द करेंगी कि रसोई घर में घुसते समय ग्रापने कैसा महसूस किया, ग्राटा गूंधते ग्रौर पकाते समय ग्रापने क्या महसूस किया था ?'

'मुझे याद नहीं कि उस समय मैंने क्या महसूस किया। क्योंकि उस समय ग्रपने ग्रापको एक विरुद्ध घरेलू स्त्री समझ रही थी। एक मामूली ग्रादमी की मामूली पत्नी। लेकिन रसोईघर से निकलने के बाद मुझे लगा कि मैं कोई बहुत बड़ी कसरत करके ग्राई हूं। मेरा ख्याल है कि घरेलू काम-काज करने वाली स्त्रियों का स्वास्थ्य ग्रच्छा रहता है क्योंकि उनकी ग्रच्छी खासी कसरत हो जाती है।

कैमरे वाले की कलम तेजी से नोट-बुक पर चलती रही। सुरेन्द्र ग्रब ग्रपनी बौखलाहट पर काबू पा चुका था ग्रौर इस नाटक को बड़े ध्यान से देख रहा था जिसकी एक पात्रा पुष्पा थी। काफी देर तक लोग पुष्पा को घेरे खड़े रहे। फिर जब पुष्पा ने थकान प्रकट की तो हर ग्रादमी कोशिश करने लगा कि वह उसके साथ बैठे। लेकिन पुष्पा उनसे क्षमा-याचना करके सुरेन्द्र का हाथ थाम कर ग्रपनी रिजर्व टेबल की ग्रोर बढ़ गई। सब लोग सुरेन्द्र को बड़े ध्यान से देख रहे थे। ग्रपनी टेबल की ग्रोर जाते हुए उस ग्रार्टिस्ट ने शायर से कहा—

'ग्राज नया शिकार फांसकर लाई है।'

'यह तो कमल से भी गया-बीता मालूम होता है। शायद कोई मजदूर-वजदूर है।

'ऐसा ही मालूम होता है। ग्रब शायद कमल से तबियत भर गई है। यह नौजवान भी काफी हट्टा-कट्टा ग्रौर मेहनती दिखाई देता है।'

'ग्रजीब ग्रौरत है, ग्राखिर हम लोगों में क्या बुराई है जो हमें छोड़कर ऐसे चुगद पकड़ लाती है।'

'सुना कमल से शादी कर रही है।'

'शादी ?' शायर ने हसरत भरी साँस लेकर कहा, 'काश यह मुझसे शादी कर ले... तो मैं ग्रगले ही हफ्ते दुनिया की सैर करने निकल पड़ूं।'

'इसे साथ लेकर ?'

'ग्रमां हटो, इसे साथ लेकर पैरों में कोई बेड़ियाँ पहननी हैं ? यह यहां ऐश करती रहे। मुझे तो सैर-सपाटे के लिए रुपया चाहिए।

ग्रार्टिस्ट ने कहकहा लगाया। ग्रौर ईर्ष्या-भरी नजरों से सुरेन्द्र को देखने लगा।

सुरेन्द्र पूरे हाल को देख रहा था। पुष्पा उसकी ग्रोर देखकर मुस्कराते हुए बोली—

'बोर तो नहीं हो रहे हो तुम ?'

'ग्रं...?' सुरेन्द्र ने चौंककर पुष्पा की ग्रोर देखा।

'क्या तुम बता सकते हो कि ये लोग मुझसे क्या चाहते हैं ?'

'ग्राप ग्रभी तक नहीं समझ सकीं ?' सुरेन्द्र ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, 'ये लोग जो कुछ चाहते हैं वह तो कुछ देर में ही समझ में ग्रा जाता है।'

'मैं कुछ देर ही इनके बीच नहीं रही। मैंने तो ग्रांखें भी इन्हीं लोगों के बीच खोली हैं,' लम्बी सांस लेकर पुष्पा बोली।

तभी एक बैरे ने स्काच की एक बोतल ग्रौर गिलास लाकर मेज पर रख दिए। सुरेन्द्र चौंककर बोतल ग्रौर गिलासों की ग्रोर देखने लगा।

बैरे ने पूछा—'ग्रौर क्या लाऊं मेम साहब ?'

'पहले ये सब उठाकर ले जाग्रो।' पुष्पा ने बोतल ग्रौर गिलासों की ग्रोर इशारा किया।

बैरे ने ग्राश्चर्य से पुष्पा की ग्रोर देखा जैसे उसने पुष्पा के मुंह से कोई ग्रसंभावित बात सुन ली हो। फिर वह बोतल ग्रौर गिलास उठाने लगा। पुष्पा ने उससे पूछा :

'कमल बाबू ग्राए थे ?'

'जी हाँ, लेकिन हाल में ग्रापको तलाश करके उलटे पाँव लौट गए।'

'ग्राग्रो सुरेन्द्र,' उठते हुए पुष्पा बोली।

सुरेन्द्र उसके साथ उठ खड़ा हुग्रा।

थोड़ी देर बाद पुष्पा की कार सड़क पर दौड़ रही थी। सुरेन्द्र चुपचाप उसके बराबर बैठा हुग्रा था। वह बार-बार पुष्पा की ग्रोर देखता, लेकिन शायद पुष्पा इस समय सड़क पर भी नहीं देख रही थी। उसकी नजरें कहीं ग्रौर थीं। ग्रौर कार ग्रपने रास्ते को पहचानती हुई दौड़ी चली जा रही थी।

कोठी के पोर्टिको में पहुंचकर पुष्पा की कार रुक गई। रामू कार की ग्रोर इस तरह झपटा जैसे उसके ग्राने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने खिड़की खोली, पुष्पा कार से उतर ग्राई। फिर रामू की निगाह सुरेन्द्र पर पड़ी तो वह चौंक उठा। एक बार पहले भी वह सुरेन्द्र को कमल के साथ देख चुका था। सुरेन्द्र भी कार से उतर ग्राया।

पुष्पा ने रामू से पूछा—

'रामू, कमल बाबू ग्राए थे ?'

'ग्राए थे मालकिन, लेकिन ग्रापको पूछ कर फौरन ही लौट गए।' रामू ने सुरेन्द्र को ध्यान से देखते हुए कहा।

'क्या देख रहे हो, रामू ?' पुष्पा मुस्करा कर बोली, ये सुरेन्द्र बाबू हैं ?'

रामू ने हाथ उठाकर बड़े ग्रदब से सुरेन्द्र का ग्रभिवादन किया। सुरेन्द्र ने धीरे से उत्तर दिया ग्रौर पुष्पा से बोला :

'ग्रगर ग्राज्ञा हो तो मैं वापस जाऊं ?'

सुरेन्द्र के स्वर में एक उकताहट छिपी थी। रामू ध्यान से सुरेन्द्र को देख रहा था। पुष्पा उसका हाथ थामकर बोली—

'इतनी जल्दी भी क्या है ? मैंने तुमसे वायदा किया है, तुम्हारे घर पहुंचा दूंगी।'

'बहुत देर हो गई गई। रूपा दीदी मेरा इन्तजार कर रही होंगी।'

'ग्राज वह तुम्हारा इन्तजार नहीं करेंगी,' पुष्पा मुस्कराई। ग्रौर सुरेन्द्र का हाथ थामे हुए कोठी के ग्रन्दर चली गई। उसने एक निगाह हाल के कमरों की ग्रोर डाली ग्रौर ठंडी साँस लेकर बोली—

'देख रहे हो, ये ग्रालीशान दीवारें... मैं इन्हीं के बीच कैद हूं।'

फिर पुष्पा ग्रपने पिता की ग्रादमकद तस्वीर के ग्रागे ग्रा खड़ी हुई। उसने सुरेन्द्र की ग्रोर देखा जो बड़े ध्यान से उस तस्वीर को देख रहा था। पुष्पा ने फिर तस्वीर की ग्रोर देखकर कहा—

'ये मेरे पिताजी हैं। कभी एक बहुत बड़ी जागीर के मालिक थे। फिर इनकी जागीर सिमटकर एक कारोबारी फर्म में बदल गई।

'पुष्पा मैसर्स, यह कारखाना अब भी इसी नाम से चल रहा है। लेकिन अब मैं केवल इस कारखाने की इमारत की मालिक हूं, जिसका माहवार किराया दस हजार आता है। जिस क्लब से अभी हम लोग आए हैं उसकी इमारत भी मेरी है। किराया दस हजार रुपए माहवार है। मीनाक्षी होटल, जो शहर का सबसे बड़ा और आलीशान होटल है वह भी मेरा ही है। एक छोटे से मार्केट की सारी दुकानों की मैं मालिक हूं पन्द्रह हजार रुपया माहवार उसका किराया आता है। ये सब कुछ पिताजी मेरे लिए छोड गए हैं। मेरे लिए यानी पुष्पा के लिए जो सिर्फ दो रोटी दोपहर को खाकर पेट भर लेती है, और दो रोटी रात को—लोग कहते हैं किसी दुर्घटना में पिताजी की मृत्यु हुई थी। उस दिन वे अपनी पुष्पा मैसर्स फर्म के एक अनुभवी भागीदार के साथ कार में आ रहे थे। वह पार्टनर ही कार ड्राइवरी कर रहा था। अचानक कार एक ट्रक से टकरा गई। जाने कैसे पिताजी ही कार में रह गए और पार्टनर सड़क पर आ गिरा। उसे बहुत कम चोटें आई, लेकिन पिताजी की मृत्यु वहीं हो गई। पार्टनर ने रोते हुए मुझे बताया कि पुष्पा मैसर्स की सिर्फ इमारत ही पिताजी की थी, कारोबार में उनका कोई साझा नहीं था। इमारत का किराया वह बड़ी ईमानदारी और पाबन्दी से हर महीने भेज देते हैं क्योंकि मुझे अपनी भतीजी समझते हैं और इसलिए उन्होंने कारखाने का नाम नहीं बदला।'

पुष्पा के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। फिर उसने सुरेन्द्र से कहा :

'पिता जी अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन अपनी बेटी के लिए इतना छोड़ गए हैं कि समझ में नहीं आता कि मैं इसका क्या करूं? अन्धाधुन्ध खर्चा करती हूं लेकिन कम नहीं होता। हर महीने मेरा मैनेजर मुझे यही बताता है कि इस महीने रुपया इतना बढ़ गया। एक बार मैं यह सोच कर अपने मैनेजर की कार में बैठ गई कि शायद यह कहीं कार को टकरा दे। फिर यह बाहर गिर पड़े और मैं मर जाऊं। लेकिन मुझे निराशा हुई जब इसने मुझे सुरक्षित लाकर यहां छोड दिया। एक बार मैंने रामू काका से कहा था, 'रामू काका, कोई ऐसा पता भी है जिस पते पर ये सारी दौलत भेज दी जाए और पिता जी वापस आ जाएं।'

कहते-कहते पुष्पा हंस पड़ी और फिर बोली, 'जानते हो क्या हुआ था? रामू रो पड़ा, वह समझा शायद मैं पागल हो गई हूं या मुझे बहुत ज्यादा नशा हो गया है। हालांकि मैं जानती हूं कि मैं नशे में इतनी मदहोश नहीं होती कि रामू काका या पिता जी की तस्वीर को पहचान न सकूं। रामू काका जो सिर्फ दो वक्त खाना खाता है और कपड़े पहनता है... इसके अलावा कभी कुछ नहीं लेता...। मैंने एक बार उससे यह भी पूछा कि वह मुझसे पांच हजार रुपये महीने तनख्वाह क्यों नहीं लेता, तो यह सुनकर भी रामू रो पड़ा था। फिर बोला था, 'बिटिया, पिता जी जिन्दा होते तो क्या तुम उन्हें भी तनख्वाह देतीं। या वे तुम्हें तनख्वाह दे दिया करते?'—लेकिन अगर पिताजी जिन्दा होते तो मैं रामू से यह सवाल ही क्यों करती?'

सुरेन्द्र कुछ न बोला। पुष्पा ने सुरेन्द्र की ओर देखा और बोली—

'अच्छा तुम्हीं बताओ—अगर पिता जी जिन्दा होते तो मैं रामू से सवाल करती?'

सुरेन्द्र कुछ न बोल सका। उसे ऐसा लग रहा था जैसे यह वह पुष्पा नहीं है जो दो घन्टे पहले उसके घर बैठी हुई कच्चे परांठे पर रूपा से झगड़ा कर रही थी। पुष्पा ने हंस कर कहा—

'नहीं बता सकते तुम! क्योंकि तुम अब भी नहीं समझ सके हो कि मैं लोगों से क्या चाहती हूं। मेरी खुद समझ में नहीं आता कि मैं किससे क्या चाहती हूं? बचपन में जब मैं रूपा के साथ स्कूल में पढ़ा करती थी तो चाहती थी कि मेरी सब सहपाठिनें मुझसे बातें करें... मेरे साथ खेला करें। मगर जाने क्यों उनमें से बहुत-सी लड़कियां मुझसे जला करती थीं और बहुत-सी मुझसे डरा करती थीं। और जब मैं कुछ बड़ी हुई तो मैंने अपने चारों ओर ध्यान से देखा. मन कहीं एक जगह जमता ही नहीं था। फिर एक दिन अचानक मुझे महसूस हुआ कि मैं जो कुछ चाहती हूं मुझे पिता जी से मिल जाता है। यह महसूस करके मन को न जाने क्यों एक गहरी शान्ति मिल गई। लेकिन जानते हो फिर क्या हुआ? थोड़े दिन बाद ही पिता जी ने वह किया जो उन्हें नहीं करना चाहिए था। मुझे बिना बताए ही वे इस दुनिया से चले गये।'

सुरेन्द्र चुपचाप पुष्पा की ओर देख रहा था। पुष्पा के होंठों पर मुस्कराहट थी। लेकिन आँखों में हल्की-सी नमी थी जो सुरेन्द्र की आँखों से छिपी न रह सकी।

पुष्पा ने अचानक सुरेन्द्र से कहा—

'जानते हो जब मैं रूपा के साथ रसोई में थी तो क्या महसूस कर रही थी?'

'क्या?' सुरेन्द्र ने धीरे से पूछा।

पुष्पा हंस पड़ी और बोली—

'मुझे ऐसा लग रहा था जैसे हमेशा से इसी रसोईघर में रही हूं। रूपा से झगड़ते हुए मुझे मजा आ रहा था कह नहीं सकती! शायद वह मेरे लिए बिल्कुल नया व अपरिचित था। क्योंकि आज तक मुझसे कभी कोई किसी चीज के लिए नहीं झगड़ा। मैंने जिस चीज की ओर भी आंख उठाई वह इतनी फुर्ती से उठा कर मुझे दे दी गई जैसे देने वाले को डर हो कि कहीं मैं उस चीज

की ओर से आँख न फेर लूं। और जानते हो जब बाबू जी मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरते हैं तो मुझे कैसा लगता है। मुझे खुद नहीं मालूम कि कैसा लगता है, बस एक नशा. ऐसा आनन्द अनुभव करती हूं जो युग-युगों से अनुभव नहीं किया। कल तुम्हारे यहाँ से आकर पिताजी की तस्वीर से ठीक वैसा ही हाथ निकलते देखा था जो मेरे सिर पर रखा गया। मुझे ऐसा लगा जैसे पिता जी के हाथ में बाबूजी का हाथ हैं। जैसे उस कांपते हुए प्यार भरे हाथ ने मेरे सिर पर छाया करके उस सारी धूप को ढक लिया है जो मुझे हर समय अपने चारों ओर फैली महसूस होती है। उन आंखों में जो मुझे क्लब में देखती हैं। होटलों में देखती हैं, जो उन आंखों में कमल की आंखें दिखाई देने लगती हैं।'

सुरेन्द्र ने एक लम्बी सांस ली और तस्वीर के पास से हट गया। उसे लग रहा था पुष्पा की इन ऊटपटांग बातों में भी एक सार है...उसके विचार व्यक्त करने का ढंग जरूर टेढ़ा-मेढ़ा था, वह लेकिन क्या चाहती यह समझ में आ गया था। वह धीरे-धीरे चलता हुआ हाल के बीच में आ गया। पुष्पा मुड़ कर उसे देखने लगी। और धीरे-धीरे से चल कर सुरेन्द्र के पास आकर धीरे से बोली :

'सुरेन्द्र बाबू !'

'पुष्पा देवी, बहुत देर हो गई। अब मुझे आज्ञा दीजिए !'

'जाओगे?' डूबे हुए स्वर में पुष्पा बोली।

'रूपा मेरा इन्तजार कर रही होगी।

'इधर देखो, मेरी ओर...।'

सुरेन्द्र धीरे से पुष्पा की ओर मुड़ा और उसकी आँखों में देखने लगा। पुष्पा ने धीरे से पूछा :

'क्या अब भी मैं तुम्हारी नजरों में अपराधी हूं !'

सुरेन्द्र चुपचाप पुष्पा की आँखों में देखता खड़ा रहा। कितनी याचना थी उन आँखों में, कितनी पीड़ा और व्यथा थी उन आंखों में। सुरेन्द्र का मन कांप उठा। अभी कुछ घंटे पहले तक ही तो वह पुष्पा से कितनी घृणा करता था। क्योंकि तब इसे वह राधा की मृत्यु का कारण मानता था। लेकिन अब वह ऐसी दिखाई न दे रही थी। उसे लग रहा था जैसे पुष्पा की हत्या की गई है। लोग कदम-कदम पर उसकी हत्या कर रहे हैं।

'मुझे तुम्हारा उत्तर चाहिए सुरेन्द्र बाबू' पुष्पा की आवाज ने सुरेन्द्र को चौंका दिया।

सुरेन्द्र कुछ देर पुष्पा की आंखों में देखता रहा और फिर धीरे से बोला :

'अ...अ... आप जब चाहें रूपा और बाबू जी से मिलने आ सकती हैं।

यह कहने के बाद सुरेन्द्र ने पुष्पा की ओर नहीं देखा। वह नहीं देख सका कि पुष्पा पर उसकी बात का क्या प्रभाव पड़ा है। वह तेजी से मुड़ा और हाल के दरवाजे से निकल गया।

और पुष्पा—वह जहां खड़ी थी वहीं खड़ी रह गई। अचानक उसके चेहरे पर इतनी खुशी उमड़ आई थी जैसे किसी बच्चे के खेलने-कूदने पर लगी रोक अचानक हटा दी गई हो। इसके होंठ कांप रहे थे, आंखों में आंसू उमड़ रहे थे। फिर उसके कांपते हुए होंठों से एक खनखनाता हुआ कहकहा फूट पड़ा जिसे सुनकर पास खड़ा रामू चौंक पड़ा और आंखें फाड़-फाड़कर पुष्पा को देखने लगा।

हंसते-हंसते पागलों की तरह नाचती हुई रामू की ओर बढ़ी और फिर अचानक रामू के कंधे पर सिर रखकर बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगी। रामू हक्का बक्का सा खड़ा था और धीरे-धीरे पुष्पा के सिर पर हाथ फेर रहा था। उसकी जुबान गूंगी हो कर रह गई थी और फिर न जाने क्या सोच कर वह स्वयं भी रो पड़ा।

कमल को देखकर पुष्पा के होंठों पर मुस्कराहट रेंग गई।

कमल ने बहुत तेज कदमों से चिन्तित मुद्रा में हाल में प्रवेश किया था। पुष्पा को देखकर अचानक वह ठिठक कर रह गया और पुष्पा के चेहरे को इस तरह ध्यान से देखने लगा जैसे जानना चाहता है कि पुष्पा में कहीं कोई परिवर्तन तो नहीं हो गया। लेकिन पुष्पा के होंठों पर वही पूर्व-परिचित मुस्कराहट थी। कमल ने एक लम्बी सांस ली और मुस्कराकर बोला—

'शुक्र है भगवान का, मैं तो समझा था अब तुम अकेली नहीं मिलोगी।'

'मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी, बैठो।' पुष्पा ने मुस्कराते हुए कहा।

'यहाँ तुम अकेली मेरा इन्तजार कर हो, बैठते हुए कमल बोला, 'और वहां मेरी मां और बहनें रोज तुम्हारी राह देखा करती हैं। और मैं रोजाना उनसे कोई न कोई बहाना कर देता हूं...क्या हो गया है तुम्हें ?

'बीमार हो गई थी, अब ठीक हूं।'

'बीमार हो गई थीं ? क्या बीमार हो कर लोग इस तरह गायब हो जाते हैं ? क्लब में नहीं तो कोठी में तो मिलतीं। मैं रोजाना चक्कर काटा करता था। उस दिन तुम्हें कहां-कहां नहीं खोजा जिस दिन पहली बार तुम्हें मां से मिलाने का वायदा किया था।'

मैं जब बीमार होती हूं तो किसी से मिलना पसन्द नहीं करती। लोग औपचारिकता बरतते हैं तो बीमारी बढ़ती हुई लगती है। जहाँ कोई बात पूछने वाला न हो वहाँ बीमारी अपने आप लोट-पोटकर भाग जाती है। मैंने तुम्हें इसलिए आफिस फोन किया था कि तुम्हें कुछ लोगों से मिलाना चाहती थी...आओ...।'

पुष्पा उठी, उसके साथ कमल भी उठ गया। पुष्पा कमल को लेकर ड्राइंग-रूम में आई। जहां बैठे लोगों को देखकर कमल ठिठक कर रुक गया। पुष्पा ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और बोली—

'आ जाओ, घबराओ मत। इनसे मिलो,' पुष्पा ने एक वयोवृद्ध गम्भीर चेहरे वाले व्यक्ति की ओर इशारा किया, 'ये महात्माजी हैं...महात्मा भोलेनाथ शास्त्री। तुमने इनका नाम जरूर सुना होगा। जब हमारे देश के नौजवान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दासता की जंजीरें तोड़ने की कोशिश कर रहे थे उस समय शास्त्री जी ने नौजवानों का नेतृत्व किया था। इन्होंने नौजवानों में भारत मां के प्रति प्यार की भावना बढ़ाने के साथ अहिंसा और सहनशक्ति का पाठ पढ़ाया था। आज़ादी पाने के बाद इन्होंने कोई पद स्वीकार नहीं किया। किसी कुर्सी के लालच में राजनीतिक गोरखधन्धे में नहीं फंसे। इन्होंने अपना जीवन देश-सेवा और समाज-सुधार के लिए दान दे दिया है।'

फिर पुष्पा ने एक-दूसरे बुजुर्ग की ओर इशारा किया—

'यह हैं मौलना सरफराज हुसैन। आन्दोलन में वह महात्मा जी के कंधे से कंधा मिलाकर जुटे रहे थे। महात्मा जी की तरह इन्होंने भी कोई कुर्सी स्वीकार नहीं की और जीवन समाज-सेवा और अल्लाह की याद में बिता रहे हैं।

और एक तीसरे आदमी की ओर इशारा करके पुष्पा मुस्कराई।

'और यह लंगड़ा मेरा भाई है... शंकर। इसने न तो आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया और न समाज सुधार के कामों में। इसने अपनी एक टांग एक लड़की के प्रेम में खो दी। लेकिन हमारे समाज का यह विशेष व्यक्ति मानव-इतिहास को जिस प्रकार लिख रहा है उस इतिहास में एक आदर्श है।
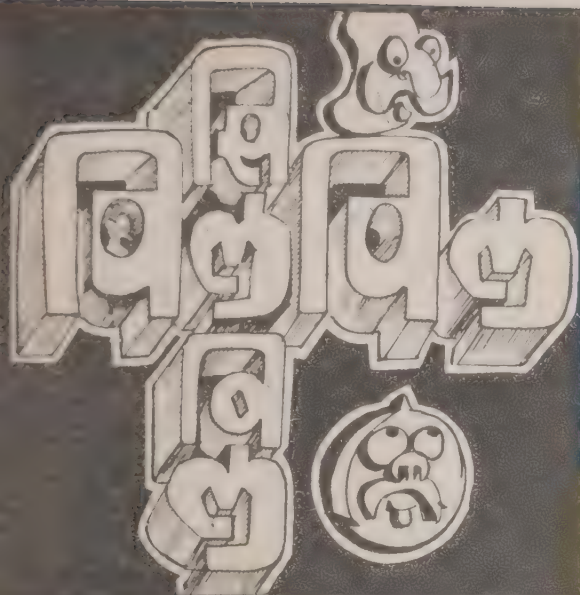
आज तो म्हारी किस्मत ही खुल गई।
सूरज तो आज भी पूरब से ही निकलया था।
लिखा है! जरूरत है बिजनेस पार्टनर्स की, जासूसी का अनुभव, कोई पूंजी नहीं लगानी होगी। मुनाफे का आधा-आधा, स्वयं आकर मिलें?
सोलह आने हमारे माफिक है।
वाकई इस बिग्यापन से तो हलुवा पूरी की गंध आ रही है।

बिग्यापन देने वाला हंग्रेज से! जार्ज मार्गोकिन टूथ ब्रुश डीलर?
कम्पनी का नाम तो जोरदार है।
हमको उस पर रौब डालने के लिये पूरा विलायती बाना बना कर जाना है सूट-बूट तो है, एक-एक छाता ले आते हैं।
छाता? बरखा होगी?
बेवकूफ, पक्के हंग्रेज के हाथ मां छाता जरूर होता है।

आज तो हम पूरे चर्चिल के भतीजे नजर आते हैं।
जौली गुड! जौली गुड, जौली गुड मौसम?
एब्सल्यूटली मारवलस सर!

यह कुत्ता बड़ा समझदार है।
HUH!
हंग्रेजी मां भूक रिया है।
HOW! HOW!

एक बहुत ही जरूरी बात याद दिलाई कुत्ते ने, हंग्रेज लोग के पास बीबी हो या ना हो लेकिन घर के बाहर कुत्ता जरूर होता है हमारे पास भी होना चाहिये।
कहां मिलेगा हमको कुत्ता?
गली में कुत्तों की कमी है? बस पकड़ लेंगे दो, और गले में रस्सी डाल देंगे?
जौली गुड आइडिया सर!

पौंड शिलिंग फार्दिंग पेंस।
वट नान सेंस!
नान सेंस! याड़ी इब वहीं तो हंग्रेजी बोलूंगा जो मने आवे है।
हमने हंग्रेजी प्राईमर पढ़ रखा है, काफी हंग्रेजी आनी चाहिये।
काऊ इज ए यूजफुलएनीमल!
इट हैज फोर लेग्ज!
मिल्क इज जोली!
इट गिव्स अस मिलक
इट ईट्स ग्रास!

महाभारत!

जल्दी बता कुत्ते लड़ पड़े तो हंग्रेज क्या करते हैं ?

एक बात तो पक्की है कि वह आपस में गाली-गलौच नहीं करते। बस एक दूसरे को नफरत से घूर कर अलग-अलग रास्ते चल पड़ते हैं ?

घूर घूर

माई पुअर डॉग चमन लाल ! गुड डे सर !
गुड डे ! आई हैव ए एब्सल्यूटली इम्पोर्टेन्ट इनगेजमेंट !
माई जी हम इस तरियों अलग हो गिये तो हमारे उस पार्टनर शिप बिजनेस का क्या होगा जहां हम जाने वाले थे ?
अटर नान सेंस ! तुझे बिजनेस की पड़ी है ? पता होना चाहिये कि सच्चा हंग्रेज अपने कुत्ते पर जान भी न्योछावर कर देता है, तुम पार्टनर शिप की बात करता है। डर्टी इंडियन !

हैं ! अब सोचता हूँ कि सिलबिल बात तो ठीक कर रिया था, हम तो जार्ज से मिलने जा रिये थे। इन कुत्तों ने बीच में टांग अड़ा दिया। धंधा पहले जरूरी है, धंधा नहीं होगा तो खाना कहां से मिलेगा बुलबुल नहीं नाचेगी तो पैसा कहां से आयेगा ? कुत्ते की ऐसी तैसी, फिर हम सच्चे हंग्रेज भी तो नहीं हैं।
लार्ड क्लाइव ने कहा था कि हर समस्या को डिप्लोमेसी से सौल्व करो, डिवाइड एण्ड रूल !
डिवाइडर एण्ड रूल ! क्लाइव साहब चौबीस घंटे ज्योमेट्री बाक्स जेब में रखता था ?
आलवेज ! एवरेडी ?
जौली गुड सर ! वलैत इज वलैत और हिंडिया इज हिंडिया ?
राबर्ट बस एण्ड साइडर ट्राई-ट्राई हगेन ?

यही है ! यही है ! मारगो के टूथ ब्रश सप्लायर्स. कितना इम्पैसिव गेट है । वहुत वड़ी कम्पनी है ?
हमको बौत ग्रक्ल से वात करनी पड़ेगी तभी दाल गलेगी ?

हैं ? ग्रन्दर की तरफ तो खुली गली है कोई दफ्तर नहीं है ! वह जो मैन उधर वैठा है उससे पूछना मागता है ?

जोली स्ट्रेंज

पारडन सर !
क्या कहा ? मेरा सर पानदान की तरह है ?
नो नो नो ! सर, ग्राई सेड पारडन । छिमा कीजिये यहा मार्गोकिन टूथ ब्रुश कम्पनी का दफ्तर ?

ग्रच्छा ! ग्रच्छा तो ग्राप लोग मेरे उस एडवर टाइज को पढ़ कर ग्राये हैं, वैलकम वैलकम । मैं ही हूं जार्ज ?
ग्राप जार्ज हैं ? फिर ग्राप धोती लुंगी में पटरी पर क्यों बैठे हैं ? दफ्तर मां कूलर ख़राव था ?
कैसा दफ्तर ? यही पटरी तो है मेरा दफ्तर ?

ग्रौर यह मेरे सामने दांतुन रखे हैं। मैं दांतुन वेचता हूं मार्गोकिन टूथ ब्रुश यानी दांतुन ग्रौर यह धोती लुंगी ही मेरा ग्राफीशियल ड्रेस है ?
ग्राप ही को विजनैस पार्टनर्स की जरूरत है ?
है है ! जरूर है जभी तो एडवर्टाइज दिया था ?

तो क्या मि० जार्ज ! हमको पार्टनर शिप के लिये कांट्रेक्ट साइन करना पड़ेगा ? हमारा धंधा क्या होगा ?
कांट्रेक्ट जाये चूल्हे में ! हांथ मिलाग्रो ग्रौर बस हो गई पार्टनर शिप ?
वैरी फनी ।

ग्रौर ग्रव इधर ग्राग्रो मेरे साथ' मैं धंधे के बार में ग्रापको समझाता हूं, ग्राग्रो मेरे साथ ?

उधर नीचे देखो ?
इधर नीचे ?
हां हां वह देखो नीचे ?

मिलीबिल पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िए!

(पृष्ठ ५ से आगे)

पवार ने दी थी। मैंने ही तो उस छतरी की हुलिया लिखी थी। अब बताइये गुरुजी। पन्द्रह दिन पूर्व चुराई गई छतरी का चुराया जाना कैसे सम्भव है। ठीक है, मुझे तो जरा पहचान-परेड में जाना है। हवलदार, तुम जरा हमारे गुरुजी का पान-इलायची से सत्कार करना।' यह कह इंस्पैक्टर उठे और टोपी पहनते हुए बोले, 'आप हवलदार को बता दीजिए कि यह आपको कहां और कैसे मिली।'

यहां भी वार खाली गया, मानो सभी पुलिस वालों ने मुझे छोड़ देने का कुचक्र रच रखा था। पहले केवल संशय मात्र पर ये लोगों को व्यर्थ पकड़ कर, झूठे प्रमाण खड़े कर, जेल में बन्द कर देते थे और आज सच्चे चोर को भी कान पकड़ कर निकाल बाहर करते हैं। अतः मुझे स्पष्ट हो गया कि यदि जेल में बन्द होना है, तो अहिंसात्मक उपायों से काम न चलेगा, बिना मारधाड़ किए सफलता कठिन है, उधर इंस्पैक्टर ने जेब से सिगरेट निकाली और उसे सुगलाने लगा। मेरा रोष उफन रहा था क्योंकि बिना ठोक-पीट, मारधाड़ के जेल में जाना असम्भव प्रतीत हो रहा था। अतः मैंने सड़ाक से उसके तमाचा मारा। यही एक रामबाण उपाय था। 'एसाल्ट' के अपराध में दीर्घ सपरिश्रम कारावास का विधान है और साथ ही जुर्माना, तथा जुर्माना न चुकाने पर उसके बदले अधिक दिन का कारावास भोगना (मेरे लिए उपभोगना) पड़ता है। मेरा विश्वास था कि चांटा लगते ही इंस्पैक्टर मेरे हाथों में हथकड़ी डाल देगा। पर खिसियाकर वह मेरे चरण स्पर्श करता हुआ बोला, (सिगरेट तो कभी की अलग जा पड़ी थी) 'भूल हुई सर, मैंने आजीवन सिगरेट न पीने की शपथ आपके चरणों को स्पर्श करते हुए ली थी। हवलदार, गुरुजी के हाथ में शायद चोट लग गई हो, जरा तेल तो मल दो भाई। क्षमा कीजिए, गुरुदेव। मुझे विलम्ब हो रहा है। अच्छा, नमस्कार।' और इंस्पैक्टर गाल सहलाता हुआ निकल गया। उसे क्या पता कि मैंने जेल जाने के लिए उस पर आक्रमण किया था। उस बेचारे ने तो सोचा कि वयोवृद्ध गुरुजी के सम्मुख धूम्रपान का प्रसाद मिला है। शिष्यादिच्छेत पराजयम्। दैव प्रतिकूल हुआ तो इंस्पैक्टर भी बदल गया।

जहां देखिए वहीं चोरी और मारधाड़ का बाजार गर्म था। अपने अपराधों की स्वतः सूचना देने वालों की क्यू थानों में लगी हुई थी। उन्हें पकड़ने के स्थान पर पुलिस उन्हें लाठी मार-मार कर वहां से भगा रही थी। 'आदर्श जेल' में जाने के लिए लोगों में होड़ लगी हुई थी। वास्तविक चोर अब छिपने की जगह बढ़ी दाढ़ी-मूंछों को साफकर सार्वजनिक स्थानों पर घूमते थे जिससे पुलिस उन्हें पहिचान कर बन्दी बना ले। झूठे चोर हाथ में 'मुझे पकड़ो' की तख्ती लिए पुलिस कमिश्नर की अदालत को घेरे रहते। परिचितों की घड़ी चुराते, उनसे अदालत में चोरी का मुकदमा चलवाते, स्वयं झूठे गवाह लाते जिससे कारावास का दण्ड मिले, पर पुलिस थी कि किसी की तरफ आंख उठाकर भी न देखती थी। अधिक हुआ तो मुकदमा चलाया, (वह भी अपराधी के आग्रह पर) और 'अपराधी पश्चातापदग्ध है' न्यायालय से कहकर मुकदमा खारिज करा दिया। आदर्श जेलों में अपराधियों की संख्या बढ़ रही थी और सरकार को उनका खर्च चलाना निरन्तर कठिन होता जाता था। न्यायाधीशों की प्रवृति कारावास का दण्ड देने की बजाय जुर्माना करने की ही होने लगी थी, पर अपराधी जुर्माना देने की बजाय कारावास में रहना पसन्द करते थे। पुलिस प्रॉसीक्यूटर अपराध सिद्ध करने के स्थान पर अपराध सिद्ध नहीं होता, यह देखने का प्रयास करने लगे। अपराधी के वकील झूठे गवाह लाकर इस बात का प्रयत्न करते कि उनके मवक्किल को दण्ड मिले। सारांश यह कि अपराधी के वकील पुलिस की ओर के वकील लगते थे और पब्लिक प्रॉसीक्यूटर डिफेन्स के वकील के समान मुकदमे की पैरवी करते दिखते थे। 'पहचान-परेड' के समय प्रार्थी अपराधी को नहीं पहचान पाया, अतः उसे छोड़ दिया जाय, इस बात पर आग्रह किया जाता था।

कितना क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गया था। पहले अदालत द्वारा छोड़ दिए जाने पर न्यायालय में ही अपराधी पर अन्य आरोप लगाकर उसे पकड़ने की चेष्टा की जाती थी और अब न्यायालय द्वारा निर्दोष घोषित कर दिए जाने पर अपराधी वहीं एक और अपराध करने लगे थे तथा पुलिस ऐसा प्रकट करती थी कि जैसे उन्हें उससे कोई मतलब ही नहीं। इधर जज साहब अपराधी को छोड़ देने की आज्ञा सुनाते, उधर न्यायालय का अनादर कर दण्ड पाने के हेतु वह जोर से चिल्लाता, 'यह न्यायालय है कि मजाक !' इस पर उसे दण्ड भी मिलता तो बस न्यायालय के उठने तक वहीं बैठे रहने तक का। बन्दी व्यक्तियों के पास पुलिस की ओर से नोटिस जाने लगा, 'कारण बताइए, आपको पुलिस क्यों न छोड़ दे ?' और इस पर हाईकोर्ट में अर्जियां आने लगीं, 'हमने चोरी की है फिर भी हमें क्यों नहीं पकड़ा गया है, यह बताने के लिए पुलिस को नोटिस दिया जाय।' सड़कों और चौराहों पर जगह-जगह लिखा दिखाई देने लगा, 'अपराधी छोड़ना हराम है, आदर्श जेल जिन्दाबाद !'

सीधे मार्ग से (अर्थात् चोरी, मारधाड़ द्वारा) कारागार में जाने की आशा अब नहीं दिखती थी। अतः मैंने अन्त में एक अत्यन्त निन्दनीय उपाय का आश्रय लिया। एक नाजुक नखरैल-कुमारी को भर-सड़क पर धक्का देकर मैं आगे बढ़ गया। अब मेरा दृढ़ विश्वास था कि आसपास के लोग मुझे पकड़ कर जेल में ठूंस देंगे। परन्तु उस कुमारी ने मेरा पीछा किया और अपनी पुस्तक से मेरी कमर की अच्छी सिकाई कर दी। कानून

(पृष्ठ १० से आगे)

प्रातः से ही मैं अत्यन्त अस्वस्थ हो उठा। अतः वह आराम का दिन योंही नष्ट हो गया। मन को थोड़ी विश्रांति मिल सकती थी, पर किशू यमदूत की तरह दिन-भर सामने घूमता रहा और बीच-बीच में अपने गाँव की राजनीति बड़े चाव से सुनाता रहा।

रात के नौ बजते ही मैंने नौकर को टैक्सी लाने के लिए कहा। सुतली से कसकर बंधे हुए एक छोटे से बिस्तर को कंधे पर रखकर किशू मुझसे पहले ही टैक्सी में बैठ गया और स्टेशन पर टैक्सी के रुकते ही कूदकर मुझसे पहले बाहर हो गया।

'तीसरे दर्जे में बड़ी भीड़ होती है, मैं जाकर जगह देखता हूं। आप अपनी टिकट ले अपने डिब्बे में बैठ जायं। मैं अभी आता हूं। ऐसा जल्दी-जल्दी कहकर किशू स्टेशन के बाहर अंधेरे तथा भीड़ में अदृश्य हो गया। उससे जो मुझे कहना था, वह धरा का धरा रह गया।

टैक्सी का भाड़ा चुकाकर मैंने सैकिंड क्लास का टिकट लिया और प्लेटफार्म पर जाकर गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। गाड़ी देर से आई और आई भी भरी हुई। अंधेरे में सैकिंड क्लास का डिब्बा दिखता ही न था। अन्त में गाड़ी छूटने से एक मिनिट पहले एक डिब्बे में मुझे ऊपर की सीट जैसे-तैसे मिली। किशू का तब भी पता न था। मैंने ऊपर चढ़कर ज्योंही बिस्तर खोला, गाड़ी चल पड़ी।

आधा-पौना घंटा बीत गया, पर मुझे नींद नहीं आई। नीचे सोए व्यक्ति से मैंने पूछा, 'बत्ती बुझा दूं?' वह बोला, 'जलने दो' मुझे लगा वह इस आशंका से डर गया है कि कहीं मेरे बोझ से ऊपर की सीट टूटकर उसके ऊपर न गिर पड़े। अतः जो कुछ होना है वह उजाले में हो, इस विचार से उसने बत्ती बुझाने का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।

'सार्वजनिक जीवन के कारण व्यक्ति की विडम्बना' इस विषय पर विभिन्न पहलुओं से सोचता-सोचता मैं कब सो गया, मुझे पता नहीं। प्रातः पांच बजे के लगभग जब गाड़ी किसी छोटे से स्टेशन पर रुकी, तो मैं एक भयंकर स्वप्न देख रहा था।

बचपन के एक पीटने वाले मास्टर साहब मेरे पर सपासप छड़ी मार-मारकर पूछ रहे थे, 'जाएगा फिर व्याख्यान में—बता, जाएगा?' और मैं जोर-जोर से चीखता हुआ कह रहा था, 'नहीं, अब कभी नहीं जाऊंगा।' इतने में किशू ने जोर-जोर से द्वार खटखटाना शुरू किया। मैं दचक कर जाग पड़ा और जल्दी-जल्दी नीचे उतरा।

'साहब, स्टेशन आ गया, जल्दी उतरिए। नहीं तो, गाड़ी छूट जाएगी।' डिब्बे में मानो आग लग गई हो ऐसे स्वर में किशू बाहर चिल्ला रहा था। जल्दी से मैंने अपना सामान बाहर के अन्धकार में फेंक दिया और प्लेटफार्म पर कूद पड़ा।

बाहर अच्छा खासा अन्धेरा था। दो तीन व्यक्ति सिर और शरीर पर दुपट्टा ओढ़े हुए ठंड से सिकुड़ रहे थे। मैं 'मैं' ही हूं, यह निश्चय हो जाने पर उनमें से एक ने अपने दुपट्टे के नीचे से सूखे हुए शेवंती के फूलों का एक छोटा-सा हार झटपट निकाला और जल्दी-जल्दी मेरे गले में डालकर बड़ी जोर से नारा लगाया, 'महात्मा गांधी की जय।'

मैं क्रुद्ध होकर बोला, 'महात्मा गांधी की जय का यहां क्या सम्बन्ध, तब उसने तुरंत स्पष्टीकरण किया, 'कुछ न कुछ तो नारा लगना ही चाहिए था न?' उस बात से मैं निरुत्तर हो गया।

मुझे जहां जाना था, वह गांव स्टेशन से दस पन्द्रह मील दूर था। किशू ने हार डालने वाले व्यक्ति को धमकाते हुए पूछा, 'शिरपतराव। रामलाल की मोटर लेकर आए हो न?'

शिरपतराव हकलाते हुए दीन स्वर में बोला, 'अरे मोटर कैसी? तुम क्या सोचे बैठे हो? आठ दिन हो गए उसकी मोटर को तो पंचर हुए। नम्बरदार की गाड़ी लेकर आया हूं। इन मोटर-वायुयानों का क्या भरोसा? इनसे तो हमारी बैलगाड़ी ही अच्छी है।'

'और गांव केबाहर से बावन बैलों की गाड़ी में जुलूस निकालने का क्या हुआ?' किशू ने दूसरा प्रश्न किया।

'अरे वह कैसे हो सकता था?' शिरपतराव अपने स्वर की दीनता और अधिक बढ़ाते हुए बोला, 'आजकल सारे बैलों को लार का रोग हो गया है न!'

नम्बरदार की गाड़ी जोतकर स्टेशन से निकलते-निकलते आठ बज गए। गाड़ी में सिरकी न थी। अतः चार व्यक्ति किसी तरह भीतर बैठ गए। नीचे लगातार गाड़ी के धचके खाते तथा ऊपर से धूप सहते हुए हम लोग लगभग ग्यारह बजे किसी तरह गांव पहुंचे।

सुबह से पेट में एक दाना भी न पड़ा था और उस पर धूप की मार। अतः मैं अत्यन्त अस्वस्थ हो रहा था। गांव के बाहर एक पीपल का चबूतरा था। उस पर दस बीस व्यक्ति सिर पर दुपट्टा ओढ़े हमा[री] प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें मैंने तुरन्त ग[ण]पत राव तथा उनके कई साथियों को [...] मुझसे मिलने बम्बई गए थे, पहिचान लिया।

'यात्रा तो सुख से हो गई न?' मुस्[क]राहट से मेरा स्वागत करते हुए गणपतरा[व] बोले, 'आइए, आइए, भाउसाहब। ऐसे पी[छे] क्यों रह गए?'

अपने सड़े दांतों को निपोरते हुए ए[क] सफेद बालों वाले नाटे और काले सज्ज[न] हाथ जोड़ते हुए आगे आए। मैं तुरन्त प[हि]चान गया कि मुझे पत्र लिखने वाले रामभा[ऊ] कुलकर्णी वकील वही हैं।

'कहिए, अब तो आप हमारे रामभा[ऊ] को पहचान गए होंगे?' गणपतराव ने पूछा पर मेरे उत्तर देने से पूर्व ही रामभाऊ ने एक[द]म स्पष्टीकरण किया, 'मेरा इस सम्बन्ध [में] कुछ भ्रम हो गया था। यह नहीं, अपितु [...] के बड़े भाई मेरे सहपाठी थे।'

'मेरे बड़े भाई हैं ही नहीं—मैं ही सब[से] बड़ा हूं।' मैं शान्त स्वर में बोला।

पर इससे रामभाऊ तनिक भी नहीं घ[ब]राए। अच्छा, अच्छा तो वह तुम्हारे ब[ड़े] भाई नहीं हैं। हम तो उन्हें आपका बड़ा भा[ई] ही समझते थे।' प्रसँग को सँभालते हुए रा[म]भाऊ ने सरलभाव से लीपापोती कर दी।

कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरे र[हने] की व्यवस्था रामभाऊ के यहां की गई थी। एक छोटे अँधेरे कूचे में एक टूटे-फूटे खंड[हर] के पास रामभाऊ का घर था। ज्योंही रामभाऊ के घर में घुसा, भिन्न-भिन्न उ[म्र] तथा भिन्न भिन्न ऊँचाई के सात आठ बच्[चों] ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। 'अरे [...] वही हैं।' गम्भीर मुद्रा तथा अर्थपूर्ण दृष्टि [से] रामभाऊ प्रत्येक को बता रहे थे। मेरे आ[ने] से पूर्व रामभाऊ ने मेरी क्या बुराई की [...] इसका ज्ञान मुझे किसी के चेहरे से भी [न] हो सका।

आठ वर्ष से कम के बच्चे मेरी अ[ोर] ऐसी आतंकपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे जैसे [मैं] कोई 'हौआ' हूं और बारह वर्ष से अधि[क] उम्र के बच्चे सर्कस के कटघरे में बँद [...] को जिस आदर के साथ देखते हैं, उसी आ[दर] भाव से मेरी ओर देख रहे थे।

'चिमे' तेरी पहली पुस्तक इन्होंने [...] लिखी है।' रामभाऊ अपनी सात आठ [...] की चिमी नामक कन्यारत्न से बोले। चि[मी] अपनी कमीज का छोर चबाती हुई मेरी अ[ोर] आश्चर्य से देखने लगी मानों 'पहली पुस्त[क]' ज्ञानेश्वरी अथवा भगवदगीता ही हो।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

चरणदास
जल्दी उठ
दाड़ी बना
नहा के आ
दांत साफ कर के आ
बाल बना
चल कपड़े पहन
जूते के लेस बांध
बटन बन्द कर
सीधा चल
जल्की कर

(पृष्ठ २४ से आगे)

प्रातः से न तो मैं शौच को ही गया था और न मैंने मुंह ही धोया था। अतः शरीर के अन्दर से भपकारे उठ-उठ कर मेरे मस्तिष्क को संतप्त कर रहे थे जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

कान के चारों ओर अँगुली घुमाते हुए तथा अत्यन्त दयनीय मुद्रा बनाकर अन्त में मैं रामभाऊ से बोला, 'जरा मुझे—वहां जाना है।'

रामभाऊ एक लड़के को पुकारते हुये बोलें, 'सँघा, अरे अन्दर से लोटे में पानी भर ला। और उसके बाद विश्वमित्र की तरह हाथ ऊँचा कर अनुनासिक स्वर में वह धीरे से बोले, 'उधर के मैदान में चले जाइये। बड़ी खुली जगह है, कहीं भी बैठ जाइये।'

हाथ में लोटा लेकर मैं मैदान की ओर जाने लगा तभी रामभाऊ के दो-चार बच्चे मेरे पीछे आ लगे। आंखें तरेरकर जब मैंने उनकी ओर देखा, तब जाकर कहीं उन्होंने मेरा पिंड छोड़ा।

एक गिरी दीवार की ओट में जगह ढूंढ़कर मैं बैठ गया, तभी दूसरी ओर से एक हाथ लम्बा कन्नी अँगुली के बराबर मोटा सांप सर्र से कोने के एक बिल में घुस गया। उस समय मेरे होशहवाश ऐसे गुम हो गये कि फिर कैसा शौच और कैसा क्या?

वहां से लौटने पर रामभाऊ के एक लड़के ने स्नान के लिए पानी रखा है' पेंट ऊपर चढ़ाते हुए फर्माया। मैं जांघिया पहनने वाला ठहरा, मेरे पास धोती न थी। अतः रामभाऊ की पुरानी धोती पहनकर मैंने खुले आंगन में ही एक बाल्टी गर्म पानी से स्नान किया।

रामभाऊ की पुरानी धोती में जगह जगह अमियों के काले और तांबे के रँग के दाग पड़े हुए थे और डिकामाली (औषधि) की ऐसी उग्र गंध आ रही थी कि बस पूछो मत। मैं स्नान अच्छी तरह करता हूं या नहीं मानो यह देखने के लिए रामभाऊ के बच्चों की पल्टन मेरे सामने खड़ी थी और वहां सूखा रह गया'''वहां पानी नहीं पड़ा' ऐसे उदगार वे लोग बीच-बीच में अँगुलियों के संकेत से व्यक्त करते रहे।

स्नान समाप्त होते ही गणपतराव और उनके साथी मुझे बुलाने के लिए आ पहुंचे।

'वाचनालय और व्यायामशाला का समारोह अभी पूरा कर डालिए।' गणपतराव बोले, 'जिससे दोपहर में आपको कष्ट न हो।

कालभैरव निःशुल्क वाचनालय का उद्घाटन समारोह गांव के सरकारी कार्यालय में होना था। उत्सव के समय गांव के दस-बीस प्रौढ़ व्यक्ति और मराठी पाठशाला के बीस-पच्चीस बच्चे उपस्थित थे। गणपतराव उस वाचनालय के मंत्री थे।

'आज के अध्यक्ष का परिचय कराना ऐसा ही है जैसा सूर्य का परिचय कराने के लिए जुगनू का प्रस्तुत होना।' गणपतराव ने अपने प्रस्ताविक भाषण में कहा, 'उनका भाषण सुनते-सुनते आपके पेट हँसी के मारे दुखे बिना नहीं रहेंगे।'

इस पर मराठी पाठशाला के सभी बच्चों ने अपने पेट पकड़ लिए और होठ भींचकर—'देखें ये हमारे पेट में हँसी के मारे कैसे बल डालते हैं,' ऐसी चुनौती की मुद्रा में मेरी ओर देखा।

'इन्होंने इस वाचनालय की सक्रिय सहायता करना स्वीकार किया है।' गणपतराव ने भाषण के अन्त में रौब के साथ सूचना दी।

श्रोताओं का बुद्धि-विकास और उनके मुख पर का तेज देखकर मैंने अपना भाषण पाँच-दस मिनिट में ही समाप्त कर दिया और जेब से एक दस रुपये का नोट निकालकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उसे गणपतराव को सौंप दिया। इस पर गणपतराव और अधिक उत्तेजित हो, एकदम उठकर बोलने लगे, 'अध्ययक्ष महोदय ने स्वीकार किया है कि वह अपना साप्ताहिक पत्र बिना मूल्य लिए हमारे पुस्तकालय को पाँच वर्ष तक भेजते रहेंगे।' श्रोताओं ने जब पुनः तालियों की गड़गड़ाहट की, तो मुझे गणपतराव की घोषणा का समर्थन करना ही पड़ा।

व्यायामशाला की नींव रखने का समारंभ पास ही में होने को था। अतः वाचनालय का समारंभ समाप्त होते ही हम सब सामान तथा श्रोताओं के साथ उस स्थान पर चले गए। वह समारोह व्यायाम से सम्बन्धित है, यह सूचित करने के लिए लाल लंगोट पहने, फूले हुए गालोंवाला तथा लम्बे डीलडौल का एक पहलवान वहां पहिले से ही ला बिठाया गया था।

मैंने गणपतराव से पूछा, 'क्यों, यहाँ न तो नींव खुदी है और न व्यायामशाला के भवन का पत्थर ही दिखाई देता है।'

गणपतराव मुस्कराते हुए बोले, 'वह सब हम बाद कर लेंगे। आज तो आप अपने भाषण में केवल यह घोषणा कर दीजिए कि इस स्थान पर भविष्य में शिलान्यास होगा।'

वाचनालय के समारोह में जो भाषण गणपतराव ने दिया था, उसी की पुनरावृति उन्होंने व्यायामशाला के समारोह में की त[illegible] यह दृढ़ आशा व्यक्त की कि व्यायामशा[illegible] के भवन-निर्माण के लिए अध्यक्ष की ओ[illegible] से सक्रिय सहायता मिलेगी।

मैंने अपने भाषण में कहा, 'मेरा औ[illegible] व्यायाम का अथवा 'व्यायामबाजी' का को[illegible] सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई है तो केवल इतन[illegible] ही कि बचपन में मेरे घर के सामने ए[illegible] व्यायामशाला थी। मेरा डील-डौल देखक[illegible] कदाचित् आपको भ्रान्ति हो गई है। वस्तुत[illegible] किसी भी शिलान्यास का कार्य कांग्रेस सर[illegible] कार के मन्त्रियों द्वारा सम्पन्न होना चाहिए[illegible] आप लोगों ने उनका अधिकार छीनकर मु[illegible] यहां बुलाया, यह कोई अच्छा काम न[illegible] किया। अस्तु जिस स्थान पर आपको य[illegible] सज्जन बैठे हुए दिखाई देते हैं वहीं व्यायाम[illegible] शाला का पत्थर गड़ा हुआ है, ऐसा आप लो[illegible] समझ लें।'

यह सुनकर सभी श्रोताओं ने खुशी [illegible] ताली बजाई। मेरी बात का अर्थ न समझ[illegible] हुए भी वह पहलवान हंसकर तालियां बजा[illegible] लगा।

भाषण समाप्त करने से पूर्व मैंने पु[illegible] एक दस रुपये का नोट गणपतराव को दिया[illegible] सम्पूर्ण समारोह के समाप्त होने पर ठहर[illegible] के स्थान पर जाने के लिये मैं एक ओर च[illegible] गया। धूप इतनी कड़ी थी कि मारे गर्मी [illegible] तबियेत बार-बार घबरा रही थी।

एक फटा हुआ जालीदार पूजावस्त्र पह[illegible] हुए रामभाऊ आंगन में मेरी प्रतीक्षा कर र[illegible] थे। 'आइए अब भोजन करके मजे से [illegible] जाइए। पांच बजे तक अब आपको को[illegible] काम नहीं है।' रामभाऊ ने मुझे आश्वास[illegible] दिया।

भोजन करते समय रामभाऊ ने अने[illegible] विषयों पर चर्चा की पर मेरा ध्यान उनक[illegible] बातों की ओर तनिक भी न था।

'हमारी पत्नी भी कविता करती हैं[illegible] रामभाऊ यकायक बोले और सीताभाई[illegible] भोजन परोसते-परोसते ही कमर को [illegible] तरह लचकाया कि ऐसा लगा जैसे कहीं द[illegible] की पतीली उनके हाथ से छूटकर गिर [illegible] जाय।

एक बड़ी डकार लेते हुए रामभा[illegible] अपनी पत्नी के सम्बन्ध में बोले, 'गांधी [illegible] के निधन पर इन्होंने जो एक सुन्दर कवि[illegible] लिखी है आपको वह सुननी ही चाहिए[illegible] गाँधी जी की मृत्यु पर हमारे गांव में [illegible] शोकसभा हुई, उसमें इन्होंने यह कविता स्व[illegible] सुनाई थी, और क्या बताऊं साहब'—रा[illegible] भाऊ बड़े कौतुक एवं चाव से उसके सम्ब[illegible]

मे बताने लगे, 'सारी सभा धाढ़ मारकर रोने लगी थी।'

'सम्भव है। कहकर मैंने ज्योंही ग्रामटी का घूंट पिया कि बस उसमें पड़ी लाल मिर्च लगने के कारण मेरी ग्रांखों में पानी ग्रा गया इसका रामभाऊ पर बड़ा ग्रच्छा प्रभाव पड़ा। पूजा-वस्त्र के छोर से ग्रपनी ग्रांखें पोंछते हुए वे बोले कुछ भी कहो, 'पर गांधी वस्तुतः एक महान् पुरुष थे।'

रामभाऊ ने जिस प्रकार गांधी जी को यह सार्टिफिकेट दिया था। उससे मुझे विश्वास हो गया कि वस्तुतः गांधी कोई महान पुरुष था।

भोजन के बाद ज्योंही मैं बिस्तर बिछा कर लेटा कि रामभाऊ की बाल-सेना ने मुझे पुनः चारों ग्रोर से घेर लिया ग्रौर सभी ने या तो ग्रपनी शाला की कापियों पर ग्रथवा कागज के टुकड़ों पर मेरे हास्ताक्षर ले लिए। बंडू ने ग्रपनी कक्षा की कापी पर मेरा संदेश लिखवाया तो संदू ने मांग की कि मैं गणपति समारोह पर वक बिनोदपूर्ण संवाद लिख दूं। सभी ने कक्षा में दिए हुए निबन्ध, मेरी रुचि की पुस्तकें' विषय पर सामग्री प्राप्त की, तो महादू ने उस सप्ताह लोकसत्ता में प्रकाशित पहेलियों के हल मुझसे पूछे।

यह सब होते-होते पांच बज गए। व्याख्यान के लिए बुलाने को किशू तथा उसके चार-पांच स्वयंसेवक ग्रा पहुंचे। कपड़े पहनकर मैं, रामभाऊ, सौभाग्यवती, सीताबाई ग्रौर मार्ग में मिलने वाले दस-बीस व्यक्ति पैदल चलकर काल-भैरव के मन्दिर में पहुंचे।

मन्दिर के सामने खुले ग्रांगन में दो-चार हजार लोगों की भीड़ थी। भिन्न-भिन्न प्रकार की दूकानों के तम्बू ग्रव्यवस्थित पड़े थे। दो तीन झूले कर्कस ग्रावाज करते हुए फिर रहे थे ग्रौर उनके पालनों में बैठे लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। एक ग्रोर को एक संगीत-मंडली ने ग्रड्डा जमा रखा था, तो दूसरी ग्रोर एक दाढ़ी वाले बावाजी एकतारे पर भजन गा रहे थे।

सारे ग्रांगन में इतना शोर-गुल गड़बड़ ग्रौर चिल्लपुकार मची हुई थी कि उसे देख कर मेरी तो कमर ही टूट गई। मुझे लगा कहां से मैं इस झंझट में फस गया।

ग्रापका व्याख्यान प्रारंभ होते ही सब शान्त हो जाएंगे।' मेरी मुद्रा से मेरे मन के विचारों का ग्रनुमान लगाते हुए रामभाऊ बोले।

एक मकान के पेड़ के नीचे लकड़ी की चौकी की व्यासपीठ बनाई थी। सौ दो सौ व्यक्ति उसके चारों ग्रोर घेरा बनाए बैठे थे।

मैं गणपराव को तनिक डांटते हुए स्वर में बोला, तुम तो कहते थे कि व्याख्यान में दस-बीस हजार की भीड़ होगी....'

'प्रति वर्ष होती है। इन सब से पूछ देखिये, क्यों न ग्यनबा ?' ग्रपने निकटवर्ती एक व्यक्ति की बांह हिलाते हुए गणपतराव बोला, 'पता नहीं ग्रब की बार क्या हो गया, रुपये में दो ग्राने भी भीड़ नहीं है।'

'ग्ररे, लार का रोग हो गया है न जानवरों को!' ग्यानबा ने भीड़ की कमी के कारण पर ग्रपनी बुद्धि के ग्रनुसार प्रकाश डाला।

किशू, ग्ररे जा एक बार ग्रौर डौंडी पिटवा दे कि ग्रब व्याख्यान प्रारंभ होने वाला है।' गणपराव किशू पर बरस पड़े।

इस पर—देखता क्या है? जा न! किशू स्वयं सेवक को डांटने लगा। परन्तु न तो वह ही ग्रपनी जगह से हिला ग्रौर न उस के स्वयंसेवक ही।

होते-होते घंटे डेढ़ घंटे में सौ-डेढ़-सौ ग्रादमी एकत्र हुए ग्रौर तब सभा का कार्य ग्रारम्भ हुग्रा। पहले कुश्ती, लेजिम लट्टू लगी लाठियों का खेल हुग्रा ग्रौर उसके बाद मैं भाषण देने खड़ा हुग्रा। तब तक सात बज चुके थे, चारों ग्रोर ग्रंधेरा छा गया था ग्रौर ग्रासपास का शोरगुल ग्रपनी चरम सीमा को पहुंच चुका था।

ग्राज तक मैंने तरह-तरह की सभाग्रों में भाषण दिये थे, पर उस दिन की सभा देखकर तो मेरी दाँती ही भिंच गई। मैं बोलना शुरू ही करने वाला था कि पास बैठे रामभाऊ धीरे से बोले, 'ग्राज मजा ग्रा जाना चाहिए।'

रामभाऊ की खोपड़ी पर एक थप्पड़ रसीद करूं, मेरी इच्छा हुई ग्रौर एक घंटे तक जो मेरे मन में ग्राया, बकता रहा। मैं क्या बोला मुझे स्वयं पता नहीं था ग्रौर न श्रोताग्रों ने उसे समझा था। फिर भी बीच बीच में तालियां बजती रहीं।

चारों ग्रोर की धूल मेरे मुंह ग्रौर नाक में घुस रही थी। ग्रतः बीच-बीच में मुझे जोर की खांसी ग्राती। उसी को विनोद समझकर कुछ श्रोता जोर-जोर से हंसते। व्याख्यान समाप्त कर ग्रपने को तथा श्रोताग्रों को गाली देता हुग्रा जब मैं बैठा, तो साढ़े ग्राठ बज चुके थे।

रामभाऊ से मैंने कहा, 'ग्रब मुझे भोजन की ग्रावश्यकता नहीं है, मुझे सीधा स्टेशन पहुंचा दो। जैसे उसे उस सम्बन्ध में कुछ पता ही न हो, ऐसा चेहरा बनाते हुए वह बोला 'क्या ग्रभी ग्रापको जाना है? मैं तो सोचता था कि इतनी दूर ग्राने पर ग्राप कम से कम दो तीन दिन तो रहेंगे ही। हमारे यहां से चार पांच मील पर पाण्डवों की कन्दराएं हैं वस्तुतः देखने योग्य हैं....'

'पाण्डव कन्दराएं गई भाड़ में।' मन ही मन बड़बड़ाते हुए मैंने गणपतराव से कहा, 'गणपतराव कुछ भी हो, ग्राज मुझे बम्बई वापिस लौटना है।'

'पर बम्बई जाने के लिए गाड़ी कौन सी मिलेगी ग्रब?'—रामभाऊ शांत स्वर में बोले।

'क्या मतलब? बम्बई जाने वाली गाड़ी ही कोई नहीं ग्रब...मैंने घबराकर प्रश्न किया।

'नौ की गाड़ी तो ग्रब मिलने से रही। गणपतराव बोले, 'ग्रपन को पहले ही चल देना चाहिए था, पर ग्रापका व्याख्यान जोरों पर था। ग्रतः ग्रापको बीच में नहीं टोका।'....'कल प्रातः ग्राठ बजे का पैसेंजर ग्रापको ग्रवश्य मिल जायेगा।' रामभाऊ मुझे ग्राश्वासन देते हुए बोले, ग्रौर तब तक दूसरी गाड़ी ही कौन-सी है?'

हो गया बेड़ा गर्क। ग्रब फिर रामभाऊ के यहां जाग्रो ग्रौर रात भर बच्चों की कचर-पचर में रहो, इस विचार से मैं कांप उठा। रामभाऊ की फटी धोती की डिकेमाल की गंध का स्मरण होते ही मुझे उल्टी-सी ग्राने लगी। भाग्य को दोष देता हुग्रा मैं चुपचाप रामभाऊ के साथ चल पड़ा।

रात को खाना खाने के बाद श्रीमती सीताबाई ने मुझे घेर लिया। ग्रसहकारिता ग्रान्दोलन से स्वातंत्र्य प्राप्ति तक के सभी राजनीतिक ग्रान्दोलनों पर लिखी हुई ग्रपनी कविताएँ उन्होंने मुझे गा गाकर ग्रौर रो-रो कर सुनाईं।

ग्रंत में गांधी जी के निधन पर लिखी कविता पढ़नी ग्रारँभ की। पहली पँक्ति पढ़ते ही वह सिसकियां भर कर जोर-जोर से रोने लगीं। रामभाऊ तो गला फाड़कर ही रोने लगे। ग्रासपास चटाई पर ग्राधे सोए हुए बच्चे भी जागकर चीखने लगे। ऐसी परिस्थिति में मेरा रुदन न करते हुए चुपचाप बैठे रहना हास्यास्पद होगा, यह समझ मैं भी रूमाल से ग्रांखें पोंछता हुग्रा रोने का ग्रभिनय करने लगा।

गांधी जी पर सीताबाई का कविता पाठ समाप्त होते-होते सामूहक रुदन का स्वर इतना तीव्र हो उठा था कि ग्रड़ोस-पड़ोस के लोग यह समझकर कि कोई ग्रनिष्ठ घटना घट गई है, दौड़ते हुए ग्राये ग्रौर वे भी उस सामूहिक रुदन के कार्यक्रम में सम्मि

लित हो गए । सीताबाई का वह काव्य-रुदन लगभग रात के दो बजे समाप्त हुआ ।

प्रातः छः बजे गणपतराव गाड़ी लेकर आने वाले थे, पर बैलगाड़ी की आवाज के स्थान पर मोटर का भोंपू सुनाई दिया । मैं समझा रामलाल की गाड़ी का पंचर ठीक हो गया है और इसलिए झटपट उठा । तभी गणपतराव द्वार से ही मेरा नाम लेकर भीतर आया, 'ये दुनाखे मास्टर आपसे मिलने आये हैं ।'

'यह नई बला कहाँ से आ गई !' आंखें मलते-मलते मैं देखने लगा । उस गांव से पन्द्रह मील पर दूसरे किसी गांव के ए० वी० स्कूल के दुनाखे हेडमास्टर थे । गणपतराव ने उनसे मेरा परिचय कराया । दुनाखे हँसते हुए बोले, मैं आपको एस. टी. सी. क्लास में पढ़ता था मैंने बम्बई के पते से आपको एक पत्र भी डाला था, आपको कदाचित् मिला नहीं ।'

मैं बोला, 'नहीं भाई क्यों क्या बात है?

दुनाखे बोले, आज हमारे स्कूल का समारोह है और मैंने आपके अध्यक्ष होने की घोषणा कर दी है ।'

'पर मुझे तो इसी गाड़ी से जाना है, दुनाखे । वस्तुतः जाना तो कल रात ही था··· बिल्कुल रोनी आवाज में मैं कहने लगा ।

'कुछ भी हो, आपको हमारे समारंभ में तो आज चलना ही पड़ेगा, साहब !' दुनाखे भी उतनी ही रोनी आवाज में विनय करने लगा, आप नहीं चलेंगे तो मेरी इज्जत चली जाएगी । आपके विषय में पहले से ही लोगों में यह धारणा बन गई है कि आप निमँत्रण तो स्वीकार कर लेते हैं पर ऐन मौके पर आते नहीं हैं । यदि आप नहीं चलेंगे तो यह मिथ्या धारणा और भी बढ़ जाएगी । हमारी सोसायटी के प्रेसिडेंट ने छाती पर हाथ मार कर घोषणा की है कि आप नहीं आएंगे और मैंने जोश में आकर उनसे दस रुपये की शर्त लगाई है कि कुछ भी हो मैं आपको लाकर ही छोड़ूंगा ।'

'तुम्हारा मतलब यही तो है कि यदि मैं नहीं गया तो तुम्हें दस रुपये का नुकसान होगा···'जेब से दस रुपये का नोट निकालते हुए मैंने कहा ।

'इतने ही से नहीं बीतेगी । कदाचित् मुझे नौकरी से भी हाथ धोना पड़े ।' दुनाखे आंखों में आंसू भरते हुए बोला ।

पिछली रात में आंसुओं की बाढ़ में डूबते-डूबते बचा था । अतः पुनः आंसुओं को देखते ही मैंने तुरन्त दुनाखे की बात मान ली।

'ठीक है, यदि ऐसी बात है तो चला चलूंगा।'

'आपको किसी प्रकार का कष्ट न होने देंगे । इसीलिए मोटर ले आया हूं । समारोह समाप्त होते ही शाम की गाड़ी के लिए आप को स्टेशन पहुंचा देंगे ।' दुनाखे बोले । उनकी आँखों के आँसू कभी के ओझल हो चुके थे और उनके मन की कली एकदम खिल उठी थी ।

'अच्छा साहब, मैं चलता हूं ।' गणपतराय ने हाथ जोड़े, 'अब आप मास्टर साहब की देख-रेख में हैं । हमारी जबावदारी समाप्त हुई । ऐसी ही कृपा बनाए रहिए । फिर कभी बुलावें तो अवश्य दर्शन दीजिए ।

मेरे आने-जाने के खर्च का क्या रहा । यह पूछने के पूर्व ही गणपतराव गायब हो चुके थे ।

रामभाऊ के घर में जैसे पहला दिन बीता था, वैसे ही दूसरा दिन दुनाखे मास्टर के यहाँ काटा । बस अन्तर इतना था कि न तो उसकी धोती में से डिकेमाली की दुर्गन्ध आती थी और न उसकी पत्नी कविता ही करती थी । अब मैंने यह विचार ही छोड़ दिया था कि मैं बम्बई कब पहुंचता हूं ।

दुनाखे मास्टर की शाला का समारोह समाप्त होने पर उस संस्था के प्रेसिडेंट जिन्होंने मेरे न आने की शर्त लगाई थी, के 'जटाशंकर टाकीज' का उद्घाटन भी अगले दिन रात को करना पड़ा । इतनी दूर आने पर हम आपको यों ही थोड़े ही छोड़ देंगे, जटाशकर मेरे गले में प्रेम से हाथ डालते हुए बोले । फिर भला मैं कैसे अस्वीकार कर देता !

बुधवार की रात को सिनेमा गृह का उद्घाटन का गुरुवार की दोपहर को सेठ जी की ठाठदार दावत खाई । संध्या समय उन की कार मुझे स्टेशन पर छोड़ गई । सेठ जी आवश्यक कार्यवश मुझे स्टेशन पर छोड़ने नहीं आ सके और दुनाखे मास्टर तो पहले दिन ही गायब हो गये थे ।

बम्बई पहुंचने के लिए मेरी जेब में प केवल तीसरी श्रेणी का टिकट खरीदने लिए पैसे रह गए थे । बृहस्पतिवार की रा को मुझे किसी गाड़ी में जगह नहीं मिली जो भी गाड़ी आती भरी आती । सारी रा ठंड से ठिठुरते हुए काटी । गला बैठ गया आँखें दुख रही थीं, अंग-अंग में दुखन थी ऐस दशा में शुक्रवार की रात को लगभग सा दस बजे दादर स्टेशन पर पहुंचा ।

··· बाहर न कोई टैक्सी थी और न विक्ट रिया गाड़ी । कुली के सिर पर सामान ला कर घिसटते-घिसटते मैं आधा-पौन घंटे घर पहुंचा। रास्ते भर मैंने गुणपतराव, राम भाऊ, सीताबाई, दुनाखे मास्टर, जटाशंक इन सब को मन-ही-मन कैसी-कैसी गालिय दीं, मुझे याद नहीं ।

घर पहुंचते ही ज्योंही मैं कोच पर लेट कि टेलीफोन की घंटी बज उठी । रात क ग्यारह बजे टेलीफोन करने वाले यह महाश कौन हैं, चिढ़कर मैंने टेलीफोन उठाया औ कड़े स्वर में पूछा 'कौन है ?'

तभी मेरी आवाज पहचानकर दूसरी ओर से कोई महाशय बोले, 'साहब हैं क्या उनका व्याख्यान होने वाला था, पर वह ऐन वक्त पर नहीं आए हैं। अतः लोगों का आग्र है कि आप आएं । अधिक नहीं, आध घंटे को भी आप आ जाएंगे, तो चल जायेगा । सब लोग प्रतीक्षा में बैठे हैं ।'

मेरे उत्तर देने से पूर्व ही 'मैं गाड़ी लेक अभी आया' कहकर उस व्यक्ति ने टेलीफोन बंद कर दिया ।

मेरे नेत्रों के सामने अंधेरा छा गया ।

तुम बिन कौन सहारा प्रभुजी ।' पड़ोस में रेडियो पर कोई आर्त स्वर में ध्रुवपद राग में गा रहा था ।
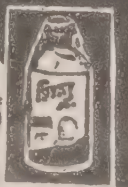
कुपात्र परिचय

कसीदा रहमान–गन्जू, खीरा कूंजा नसीब–नासपीटी, रिषी कपूत ट्रिकी शिम्मी शुबह, अमितांभ बचपन अमिट शोशी खिजय, करिक्षित सपूर टीटू सिंह सिंकी, लेखक–गायर सरहदी संगीत-खोया आम, गीत-जाहिर
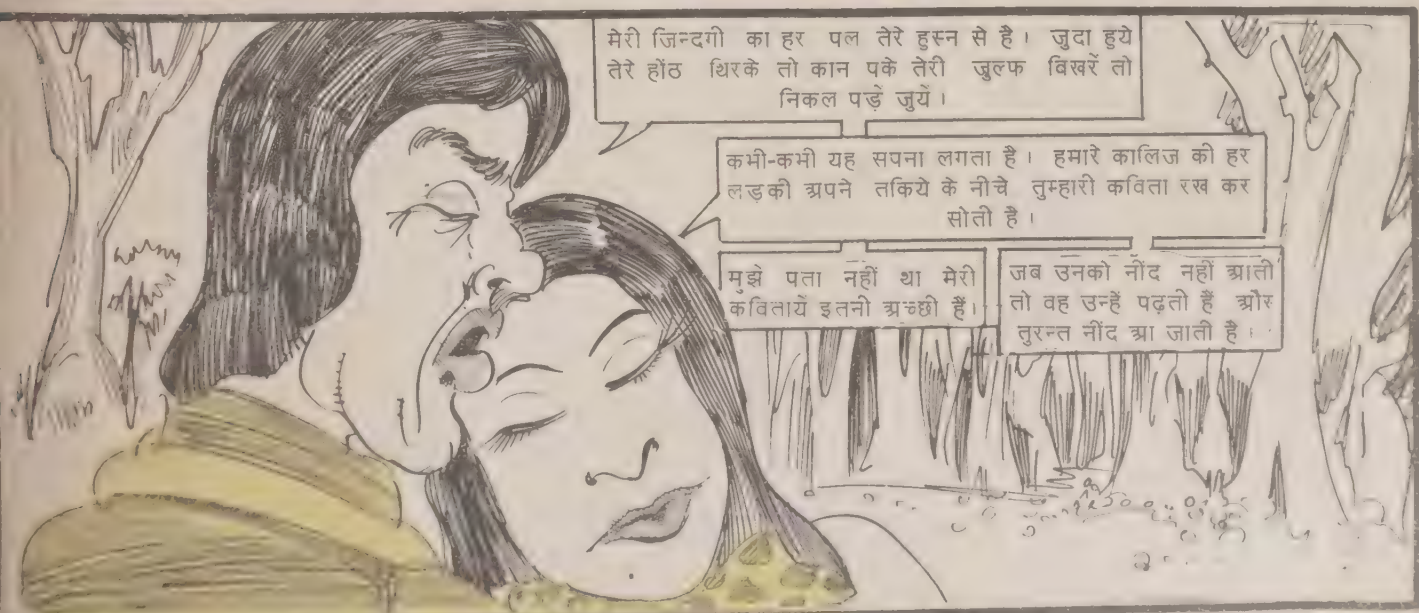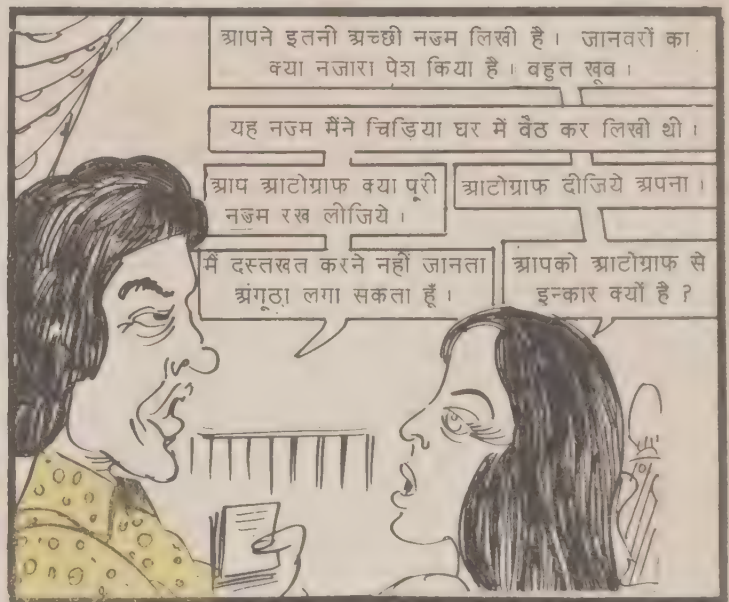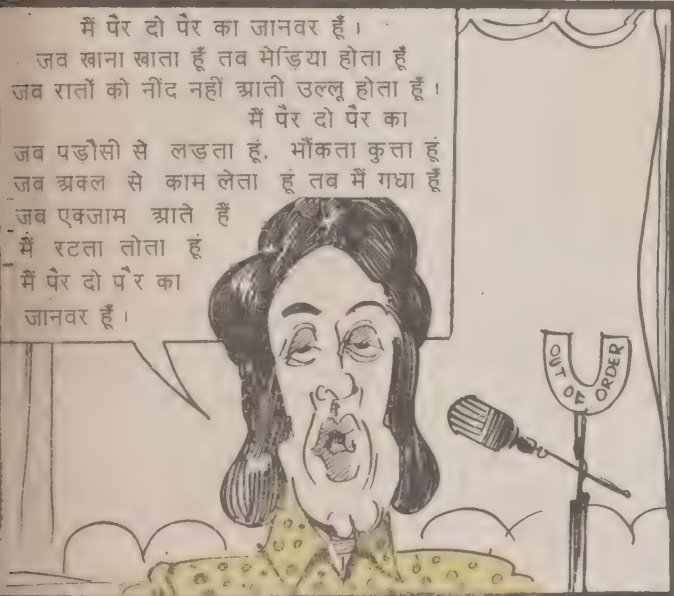
अमिट मेरे मा-बाप ने कहीं और शादी पक्की की है। तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं ?
तुम रोने की प्रैक्टिस शुरू कर दो। शादी के बाद काम आयेगी। कूजा शायद मैं तुम्हारा नाम अन्तिम बार पुकार रहा हूं।
अन्तिम बार ?
हां, आज से मैं दही खाना छोड़ रहा हूं। दही ही नहीं लूंगा तो कूंजे का क्या करूंगा ?
अमिट तुमने सोच-समझ कर फैसला किया है ?
हां अन्तिम फैसला है अब सिर्फ दूध या पानी ही लूंगा।
शायर का हर लफ्ज उसके दिल से निकलता है।
जभी, अमिट जब बोलता था तो होंठ नही हिलाता था। ऐसा लगता था कि आवाज उसके पेट में से आ रही हो. और उसकी बातों में हल्दी, प्याज, लहसुन की गंध आती हो। तुम अभी-अभी पुस्तक ही मुझे क्यों भेंट कर रहे हो कोई और किताब नहीं मिली।
बाजार में आजकल यही एक महा-बोर किताब है। कोई और किताब लाता तो शायद हम उसे पढ़ने बैठ जाते और याद ही न रहता कि यह हमारी सुहागरात है।
मैं आ गया पिता जी. शायर अमिट को मैं गली के नुक्कड़ पर छोड़ आया हूं. अब आपका बेटा अमिट मैल हो तेरा।
बेटा अच्छा ही होता तुम शायर बने रहते। अब क्या पुश्तैनी धंधा करोगे. मूंगफलियां बेचने का ?
पिता जी, आदमी को शायरी करने के बाद छोले या मूंग-फली बेचने का धंधा ही सूट करता है। क्योंकि कविता के दौर में उसके पास कविताओं वाले कागजों का ढेर हो जाता है। वही पुड़िया बनाने के काम आती हैं। रद्दी नहीं खरीदनी पड़ती।
अच्छा, आज से तुम बैठना बस अड्डे पर।
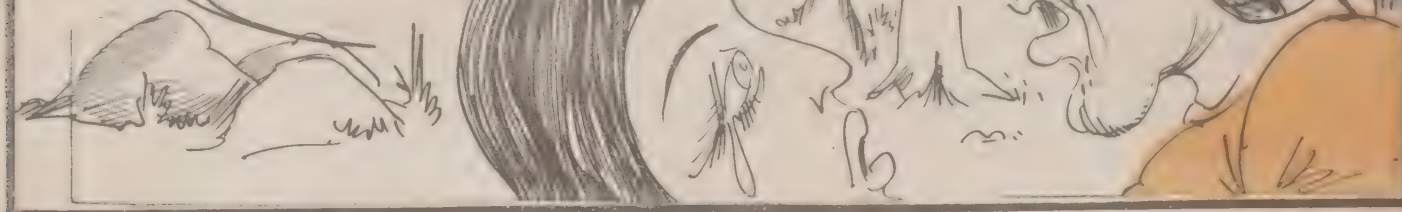
इस बीच पर्दे पर बीस वर्ष गुजर जाते हैं। परन्तु अमिट की कविताओं के बोझ से दर्शकों को लगता है कि चालीस वर्ष गुजर गए हैं। कूजा का बेटा ट्रिकी जवान हो जाता है।
20
40

मेरे डैडी कहते हैं कि जिस लड़की का हाथ एक बार पकड़ो उसे उम्र भर मत छोड़ो। मैं भी यही करूंगा।
हाथ नहीं छोड़ोगे तो वह खाना कैसे पकायेगी?
यही तो ट्रिक है, वह खाना नहीं बना सकेगी और मुझे बीवी के हाथ का बना खाना खाकर बीमार नहीं होना पड़ेगा।

अमिट साहब, आपने अभी-अभी के बाद कोई नई किताब नहीं छपवायी। क्या कारण है? क्या आपके पैन में स्याही खतम हो गई है या कागज महंगे होने के कारण?
मुझे अब अपनी कवितायें न लिखने के पैसे मिलने लग गये हैं। खूब कमाई होती है। कवितायें लिख कर उतने पैसे मैं कभी न कमा पाता।
कविता न लिखने के पैसे? यह कैसे संभव हो सकता है।
हां यह सच है, नींद की गोलियां बनाने वाली कम्पनियों ने मुझे पैसे दिये। मेरी कवितायें इतनी नींद लाती थीं कि उनकी गोलियों की बिक्री कम हो गई। जिस घर में मेरी कविता पढ़ी जाती वहां सब चूहे भाग जाते, मच्छर मर जाते। चूहे मार दवा तथा मच्छर नाशक दवायें बनाने वाली कम्पनियां भी मुझे इसी बात की रायल्टी देती हैं कि मैं कवितायें न लिखूं।

मैं समझता हूँ कि सिंकी को वह राज बता ही देना चाहिये।
अब आप क्या सोच रहे हैं?
कौन-सा राज? यही कि तुम सोते में अंगूठा चूसते हो?
नहीं, वह राज कि वह हमारी बेटी नहीं है।
अब शादी से पहले यह राज उसे बताने का फायदा क्या होगा।
फायदा क्यों नहीं होगा? वर्ना फिल्म का कबाड़ा हो जायेगा। फिल्म में क्लाईमेक्स लाने के लिये तुम क्या चाहती हो कि फिल्म पिट जाये और मैं दोबारा गुमनाम हो जाऊं जैसे पवित्र पापी के बाद हो गया था।

बताओ तुमने मुझे क्यों छोड़ा था ?

इस वक्त न तुम समझ सकोगी न मैं समझा सकूंगी।

क्यों क्या वह कारण भी आइसटीन के आपेक्षिकता के सिद्धांत जैसा है ?

मेरे गले में दर्द है।

क्या कहा ? सिंकी चली गई है तो जाने दो। परेशान क्यों होते हो ?

वह गलती से अपने साथ मेरा रुमाल भी ले गई है।

गम डे ओ।

फिर तो तुम्हें उसका पीछा करना चाहिये। रुमाल मुफ्त आता है ? पूरे चार रुपये पिचत्तर पैसे का आता है।

गंजू कई बरसों बाद देख रहा हूं कि नासपीटी इस घर में नेगलेक्टिड महसूस कर रही है। बताओ यह सिंकी कौन है ?

अब यह जख्म नासूर बन गये हैं। हमें इनको हंसते जख्म बनाना है।

यह जख्म बीस साल पुराने हैं। तुमने बीस साल बा फिल्म देखी होगी। उसमें मैं थी विश्वजीत से मेरी शाद हुई थी यह उसी वक्त की बच्ची है।

हां हमारे घर के लिये यह बारूद साबित हो सकता है।

(पृष्ठ २३ से आगे)

स्वयं हाथ में लेना उसकी गलती थी। लोग उस युवती की ओर तनिक बिस्मय से देखने लगे। उनका विचार था कि कब्र में पैर लटकाए चलने वाला यह बूढ़ा युवती को धक्का नहीं दे सकता। अतः उन्होंने मेरा ही पक्ष लिया और मैं अब भी जेल के दर्शन न कर सका। इसके अतिरिक्त उनके मत में युवती द्वारा दिया हुआ दण्ड ही मेरे लिए पर्याप्त था।

अब नियम के प्रतिकूल अर्थात् पुलिस की सहायता के बिना ही मैंने जेल जाने की तरकीब लड़ाई। पन्द्रह दिन तक दाढ़ी बढ़ाई, एक फटा हुआ पजामा और मैला कुर्ता लेकर बन्दी का वेष बनाया और कारागार के निकट की झाड़ियों में छिपा रहा। उधर से जब बन्दियों का एक समूह 'सांस्कृतिक चित्रपट' देखकर लौट रहा था, मैं उसमें मिल गया और जेल की ओर चलने लगा। बन्दी एक-एक कर के अन्दर जाने लगे, मेरी बारी भी आयी पर तुरन्त पहरेदार ने मुझे रोक दिया क्योंकि शेष बन्दी चिकनी दाढ़ी बनाए, स्वच्छ सफेद कुर्ता और जाँघिया तथा सिर पर धोबी की धुली गांधी टोपी पहने हुए थे। इनमें खूनी, डाकू, व्यभिचारी और बलात्कार करने वाले थे। उन्हें वह प्रहरी खुशी से उस नन्दन-वन में जाने दे रहा था, पर मुझे उसने भयंकर अपराधी समझकर भीतर जाने से रोक दिया। वस्तुतः ऐसे बन्दीगृह में प्रहरी की कोई आवश्यकता नहीं थी। पर यहां वह इसलिये न था कि बन्दियों को भागने से रोके। उसका कार्य तो यह था कि यदि कोई अनधिकृत डाकू घुसने का प्रयत्न करे, तो वह उसे रोक दे।

इस प्रकार तंग आकर अन्तिम प्रयास करने का निश्चय किया। मैंने एक तख्ती तैयार की और उस पर लिखा, 'अपराधियों को छोड़ने वाली सरकार तोड़ दो' एक बोतल में सेंहुड़ की कलियों का ताम्रवर्णी रस भर उस पर स्कॉच ह्विस्की नं० १ की चिट लगाली। एक हाथ में वह बोतल तथा भगवा झंडा तथा दूसरे में वह तख्ती ले रास्ते में नशेबाज़ की तरह लड़खड़ाता हुआ चलने लगा। 'सरकार तोड़ दो' का नारा महान् अपराध था, उसके लिए जन्मभर कारावास का दण्ड निर्धारित था। कहीं उसे बुढ़भस की सनक मानकर मुझे न छोड़ दें, अतः मैंने शराब की बोतल ले ली थी। फिर भी सरकारी वकील ने मेरा पक्ष लेते हुए कहा, 'वस्तुतः सरकार उलटने का इसका उद्देश्य न था, यह तो केवल शराब के नशे में ऐसा बड़बड़ाना था। अतः मैं दण्ड देने के लिए अदालत से आग्रह नहीं करता।'

मजिस्ट्रेट ने मुझे 'निर्दोष' कहकर छोड़ दिया। बोतल में शराब नहीं है, यह पुलिस को ज्ञात था। सरकारी वकील ने भी कहा कि वह शराब न होकर सेंहुड़ की कलियों का रस है। इससे यह सिद्ध होता था कि मैं नशे में नहीं बोल रहा था और मैंने सरकार की उलटने का अपराध किया था। पर इस सम्बन्ध में सरकारी वकील साहब बिल्कुल चुप्पी साध गए।

यद्यपि अदालत ने फैसला दे दिया था, तथापि मैं हठ पकड़े हुए था। कठघरे में खड़ा होकर चिल्लाने लगा, 'पर शराब के नशे में बेहोश होना भी तो अपराध है।' शराब के नशे में यह कुछ बड़बड़ा रहा है, यह कहकर मेरा बचाव करना अब सरकारी वकील के लिए भी संभव न था। कोर्ट को मेरी बात सत्य प्रतीत हुई, पर तभी सरकारी वकील ने कहा, 'पर उसका यहां कोई संबंध नहीं है। प्रस्तुत आरोप केवल १४४ दफा के अन्तर्गत है। शराब बन्दी की दफा का नहीं है। अतः आपका पहला निर्णय ही लागू होगा। शराब पीने के अपराध में दूसरा मुकदमा चलाया जाएगा' इस पर भी मजिस्ट्रेट मुझसे ही सहमत रहे। कानून की बाल की खाल निकालते हुए उन्होंने निर्णय दिया, 'शराब के नशे में नहीं, शराब पीकर सरकार को उलटने के प्रचार करने के बदले मैं अपराधी को दोषी ठहराता हूं और…'

तभी मैं एक देशभक्त की तरह बोला, 'मैंने जान-बूझकर अपराध किया है मुझे अधिकाधिक दण्ड मिलना चाहिए।' पर सरकारी वकील ने पुनः आपत्ति की और बोले, 'अपराधी का यह पहला अपराध है, अतः उसकी उम्र को देखते हुए मैं कठिन दण्ड का आग्रह नहीं करता।'

मैं बीच ही में बोल उठा, 'प्रथम अपराध? छतरी चुराने से लेकर अब तक सत्रह अपराध कर चुका हूं, जनाब।'

सरकारी वकील बोला, 'अपराध की स्वीकृति मात्र पूर्ण प्रमाण नहीं हो सकती' तथापि न्यायाधीश ने मुझे दो सप्ताह की सपरिश्रम कारावास की सजा दी। मेरा लक्ष्य कुछ-कुछ पूरा हुआ।

कारागार में पहुंचने पर मुझे कुछ आघात-सा लगा। मुझे अशिक्षित बन्दियों को शिक्षा देने का कार्य दिया गया और उसके बदले वेतन भी। बन्दीगृह के बाहर मुझे केवल ७॥ (पेन्शन मिलती थी, पर यहां खाने-पीने के बाद भी ६०)रु० वेतन के रूप में मिलते थे और ऊपर से रहना, सिनेमा और वाचनालय मुफ्त।

इस बन्दीगृह का सुपरिन्टेन्डेंट बड़ा दक्ष व्यक्ति था। एक बार बंदीगृह की दीवार की मरम्मत के लिए बाहर एक सीढ़ी लगाई गई थी, पर जब उस पर चढ़कर नकली चोर बंदीगृह में आने लगे तो उसने काम समाप्त होते ही वह सीढ़ी अन्दर दीवार के सहारे खड़ी करवा दी। उसका उद्देश्य था कि उसका लाभ उठाकर बन्दी रात में भाग जायं। पर उसकी यह योजना सफल न हुई। किसी ने उसे आड़ी करके रख दिया, कोई बन्दी बाहर नहीं गया। उन्हें कोई बहार जाकर भीख थोड़े ही मांगनी थी? एक बार बंदियों को बाहर भाग जाने की सुविधा देने के लिए चहारदीवारी के दो छेद निकाल कर वहां एक दरार कर दी गई थी, पर अगले दिन अन्दर के बंदियों की संख्या कम होने के स्थान पर दो और बढ़ गई थी क्योंकि भागा तो कोई था नहीं, उल्टे दो अनधिकारी व्यक्ति अन्दर अवश्य घुस आए थे। तीसरे दिन बन्दियों ने ईंट और गारे से वह दरार बंद कर दी क्योंकि उन्हें और अधिक भीड़ नहीं चाहिए थी।

बन्दीगृह के औषधालय में विष की बोतल ऐसे रखी थी कि कोई भी उनका उपयोग कर सकता था। एक पर लिखा था, 'जालिम विष! मृत्यु के लिए केवल डेढ़ रत्ती।' पर वह एक रत्ती भी कम नहीं हुआ। अधिकारियों को जब यह ज्ञान हुआ कि बंदी छूटने से पहली रात उसका प्रयोग करने वाले हैं, तो तावड़तोड़ उन्होंने बोतल हटा दी। फांसी लगाने के लिए भी जो रस्सी के टुकड़े पड़े थे, उन्हें भी बन्दियों ने सम्भाल कर रख दिया था। उस दक्ष अधिकारी को असली अपराधी चाहिए थे, पेट भरने के लिए आने वाले नकली भुक्खड़ चोर नहीं।

इस जेल में आने वाले व्यक्ति हड्डियों के ढांचे होते, पर जाते समय गामा की तरह पहलवान बनकर जाते। कितने ही पुराने रोगी इस आदर्श बन्दीगृह में आते ही स्वस्थ हो जाते क्योंकि यहां औषधि, पथ्य की पूर्ण व्यवस्था थी। डाक्टर, वैद्य भी वायु-परिवर्तन की जगह इसी बंदीगृह की सिफारिश करने लगे। जब उन्हें किसी को वायु परिवर्तन के लिये भेजना होता, तो अमुक व्यक्ति ने मेरी फीस नहीं दी है, कहकर उस पर मुकदमा चलाकर वह उसे यहां भेज देते।'

अन्त में जैसे-जैसे मुक्ति के दिन निकट आने लगे, वैसे-वैसे मेरा हृदय कम्पित होने लगा। और उधर दुर्दैव से अच्छे आचरण के कारण दो दिन की छूट मिल गई थी। इस

मेरा छोटा भाई राजेश खेलकूद में अपना अधिकांश समय देता था और पढ़ने की ओर ध्यान नहीं देता था।

एक दिन पिताजी ने उसे डांटते हुए कहा, 'राजे, अगर तुम परीक्षा में फेल हो गए तो मैं तुम्हें घर से निकाल दूंगा।'

राजेश ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया, 'पर यह घर तो सरकार का है, आप कैसे निकाल सकते हैं।'

पिताजी सरकारी कर्मचारी होने के नाते सरकारी क्वार्टर में रहते हैं।

●

एक दिन मैं अपनी मौसी के यहां गया। मौसी के दोनों छोटे बच्चे, जिन को हम लोग प्यार से नवाब छक्कन और टीपू कहते हैं, आए और आपस में सवाल-जवाब करने लगे। नवाब ने टीपू से पूछा, 'तेरी मां का क्या नाम है?'

टीपू ने कहा, 'पहले तू बता।'

नवाब ने उत्तर दिया, 'मेरी मां का नाम तो अम्मां है।'

यह सुन कर टीपू नवाबपर झपट कर बोला, 'तू ने मेरी मां का नाम क्यों लिया?'

●

एक बार पापा ने नाश्ते के समय मम्मी से बिसकुट लाने को कहा। मम्मी बोलीं, 'बिसकुट तो आउट आफ स्टाक हैं।'

मेरा आठ वर्षीय छोटा भाई पप्पू मम्मी से पूछने लगा, 'मम्मी आउट आफ स्टाक का मतलब क्या होता है?'

मम्मी ने कहा' 'मतलब घर में नहीं है।'

कुछ दिनों के बाद पापा घर में नहीं थे। उन के एक मित्र उन्हें पूछने आए, पप्पू तपाक से बोला, 'अंकल आज तो पापा आउट आफ स्टाक हैं।'

●

मेरी परीक्षा चल रही थी। मैं कापी ले कर अपना पाठ याद किया करता था। मेरी तीन वर्षीय बहन रीता मुझे देखती रहती थी। कुछ दिन बाद मेरे माता-पिता यात्रा पर गए। रीता भी उनके साथ गई थी।

लौटने पर मैंने रीता से पूछा, 'तू मुझे याद भी करती थी?'

उसने भोलेपन से कहा, 'मेरे पास कापी ही नहीं थी, याद कैसे करती!'

हम सब खाने की मेज पर बैठे थे। मेरा पांच वर्षीय भाई दीपक बड़ी उछलकूद मचा रहा था। मम्मी ने उसे डांट कर चुपचाप बैठने के लिए कहा पर वह माना नहीं। एक दो बार जब वह गिरते-गिरते बचा तो
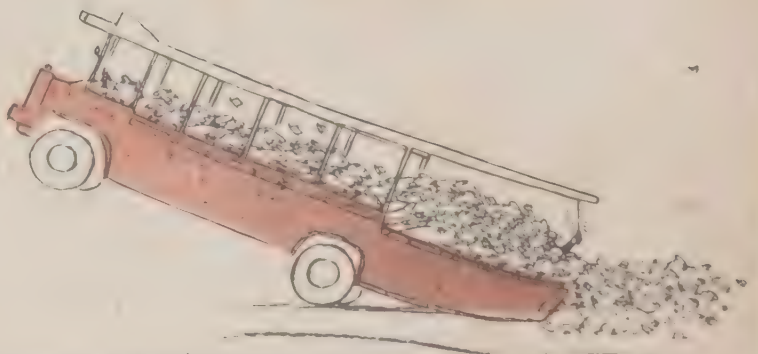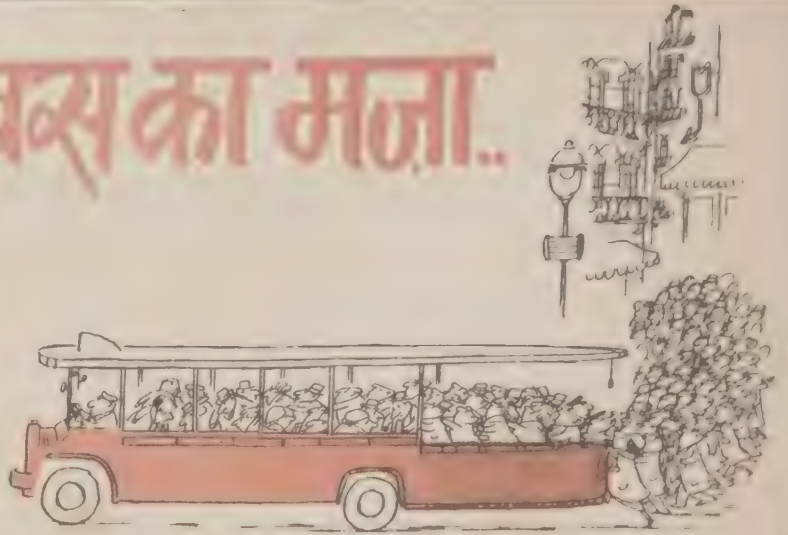
प:पा ने कहा, 'अगर तुम गिरे और चोट लगी तो मैं तुम्हें अस्पताल नहीं ले जाऊंगा।'

दीपक ने भोलेपन से पूछा, 'डाक्टर को यहीं बुलवाएंगे ?'

●

मेरे भैया जब भी किसी से कोई काम करवाना चाहते तो कहते, 'साथी हाथ बढ़ाना···' और अपना काम करवा लेते ।

एक दिन भैया कुछ अंगूर लाए और चुपचाप अपने कमरे में बैठ कर खाने लगे । मेरे चार वर्षीय भानजे अशोक ने खिड़की से देखा तो झट कमरे में जा कर अंगूर खाने लगा । भैया न कहा, 'अरे, अरे यह क्या कर रहे हो ?'

'एक अकेला थक जाएगा, मिल कर बोझ उठाना ।' कहते हुए अशोक के बाकी अंगूर भी साफ कर दिए ।

●

मेरा आठ वर्षीय भतीजा बाहर की चीजें खाने के लिये अकसर मुझ से पैसे मांगा करता है । मैं हमेशा यह कह कर टाल देता हूं कि बाहर की चीजें गंदी होती हैं ।'

एक दिन वह मेरी बात सुनकर बोला, 'चाचाजी आप भी तो बाहर की चीजें खाते है ।'

मैं ने कहा, बिल्कुल नहीं ।'

इस पर वह बोला, 'आपजो गेहूं खाते हैं, क्या वह घर में पैदा होता है ?'

●

एक दिन मेरी छोटी बहन जया ने मां से कहा, 'मेरे पेट में दर्द हो रहा है ।'

मां ने उसे समझाते हुए कहा, 'तुम्हारा पेट खाली है, इसलिए दर्द हो रहा है ।'

कुछ दिन बाद हमारे चाचाजी मद्रास से आए । उन्होंने एक दिन कहा, 'मेरे सिर में दर्द हो रहा है ।'

जया पास खड़ी थी, झट बोल उठी, 'चाचाजी मुझे मालूम है कि आपके सिर में दर्द क्यों हो रहा है । आप का सिर खाली है, उस में कुछ भी नहीं है ।'

●

आपने कैसे जाना कि मैं दफ्तर में हूं ?
मुस्तैदी से काम करते आपके कर्मचारियों को देखकर—आगंतुक ने मुस्कराते हुए कहा ।

●

मालिक—'रमेश जी, कल आप ऑफिस क्यों नहीं आये ?'

'जी आया था, किन्तु पार्किंग के लिए कोई जगह नहीं मिली, इसलिए वापस चला गया !'

दीवाना तेज फ्रैंडस क्लब

राजू केशी, चमथाली गाव भक्तपुर, काठमाण्डू, २८ वर्ष, बोक्सिंग करना, एक्टिंग करना।

ईश्वर चन्द्र, [illegible] पाणा), [illegible] वर्ष, [illegible] करना, पत्र मित्रता, [illegible] घूमना।

[illegible] पिल्ले, सन्तोष हाउस, रूम नं० २ [illegible] आई. टी., पवई बम्बई, ७६ १६ वर्ष, [illegible] खेलना, लड़कियों से रोमांस करना।

राम कृष्ण हांडा, [illegible] काठमान्डो (नेपाल), १९ वर्ष, जासूसी करना, नेताओं के भाषण सुनना, देश सेवा करना।

[illegible] कटारिया, श्री तारा [illegible] रिया सर्राफ, नजदीक [illegible] (बिहार) २२ वर्ष, बैडमिन्टन [illegible]

इन्द्रेश्वर दत्त शर्मा, डा० ओम प्रकाश शर्मा, धनश्याम गेड दादरी (बुलन्दशहर), १६ वर्ष, कुत्ते की बोली बोलना।

अशोक कुमार शर्मा (दीवाना), [illegible] पार्क, [illegible] इश्क करना, मूछ रखना।

[illegible] अता उल्ला, राज-विराज (नेपाल), १६ [illegible] रेडियो में फरमाईश भेजना, दीवाना [illegible], लड़कियों के साथ फोटो खिचवाना।

इन्द्रपाल कोहली, म. न. ६६५६/२, कसाबपुरा, नजदीक ईदगाह रोड, दिल्ली-६, १६ वर्ष, व्यायाम करना, फरमाईश भेजना।

प्रमोद कुमार [illegible], [illegible] प्रसाद, सिवान (बिहार), १६ वर्ष, [illegible] हटाना, देश सेवा करना, दीवाना पढ़[illegible]

वेद प्रकाश भारद्वाज, ७३, लेडी हार्डिंग होसपिटल, नई दिल्ली, २१ वर्ष, पेन्टिंग करना, कहानी लिखना, पढ़ना, मित्रता।

प्रताप सिह सूर्यवंशी [illegible], कुरकल्वा, फरह, [illegible] वर्ष, प्रेमिका को स्कूटर पर बैठाकर [illegible]।

श्रीति मोहन गोयल, १/१८, कैलाश नगर, मैन रोड दिल्ली-३१, १९ वर्ष स्कूटर चलाना, गाने गाना बेमतलब लड़ना।

ए. एल. दीवाना, [illegible] सिम्पल दरवाजा लाहौर १८ वर्ष, रेडियो सुनना, लड़कियों के पीछे दौड़ना।

अरविन्द सोमानी, श्री [illegible] प्रधान नगर, १३ वर्ष, [illegible] करना, अपने [illegible]।

राजकुमार वर्मा, मो० ऐसारियन बिलारी, मुरादाबाद, १६ वर्ष सिर के बाल काटकर ताबीज बनाकर बेचना, लड़कियों की नाक काटना।

अमृत लाल अबेजा, ३८०४, गली राम नाथ परवा, पहाड़गंज दिल्ली-५५, २० वर्ष, दोस्तों से दोस्ती निभाना, हंसना और हंसाना।

विनोद कुमार जैन, नदरई गेट, भौंरा-भौंरा कुंआ, कासगंज, उ. प्र. १६ वर्ष, जासूसी, बैडमिन्टन, भाभी से चप्पल खाना।

अशोक कुमार गुप्ता, ५०७७, [illegible] स्ट्रीट, भटिण्डा, १९ वर्ष, प्यार की तलाश करना, घूमना, फिरना, दीवाना पढ़ना।

धर्मोगल शर्मा, एम. ई. एस. [illegible] पी. ओ. मरियानी-७८५६३४ [illegible] (असम), १९ वर्ष, प्रगतिशील पुस्तकें प[illegible]

मनजर सिह बजराल, जी-१६/६ मालवीय नगर, नई दिल्ली, २१ वर्ष, ताश खेलना, सिनेमा देखना, सड़क पर चक्कर लगाना।

खड़ग बहादुर, अमर डायकेम, पी. बो-२८, शहाड (कल्याण), २२ वर्ष, शतरंज खेलना, उपन्यास पढ़ना।

राकेश कुमार कोछड़, वार्ड नं० १३ खन्ना, १५ वर्ष, साईकल चलाना, फुटबाल खेलना।

दीवाना तेज फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर पेन फ्रेंडशिप के कालम में [illegible] फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटो[illegible] के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जाये[illegible] लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रैंड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न [illegible]

हमारा पता :-दीवाना तेज साप्ताहिक,

८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-१

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में ही साफ-साफ लिखें

नाम ____________________

पता ____________________

आयु __________ शौक __________

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये

पहले बीच से मोड़िये फिर नं० २ की लाइन को १ नं० की लाइन से मिलाइये।

भारत के सुदूर अन्दरुनी इलाकों में आज भी कई पिछड़ी जन जातियां, आदीवासी रहते हैं। यह लोग आधुनिक तकनीक व सभ्यता से कोसों दूर अछूते रह गये हैं। लोग बहुत सीधे व सच्चे हैं। अब इनको भी आधुनिक सभ्यता का लाभ पहुंचाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। ताकि यह लोग भी इस वैज्ञानिक युग की उपलब्धियों का उपयोग करें। एक वात तो पक्की है कि यह प्रयत्न जरूर इनको वना देगी (क्या? यह मोड़ कर देखें)

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा सुपुत्र दैवज्ञभूषण पं० हंसराज शर्मा

१२ अप्रैल से १८ अप्रैल १९७६ तक

मेष : १३ अप्रैल को सूर्य लग्न में और अपनी उच्च-राशि में प्रवेश कर रहा है, शत्रुपक्ष से और सेहत सम्बन्धी कुछ चिन्ता बनेगी, सिरदर्द रह सकता है, वैसे कारोबार के लिए ग्रहचाल अनुकूल है।

वृष : खर्च पहले से कुछ कम होगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होता दिखाई देगा, कारोबार भी मंगलवार से काफी अच्छा होता जावेगा, इन दिनों में कोई विशेष सूचना मिलेगी या किसी विशेष व्यक्ति से मुलाकात।

मिथुन : मंगलवार तक का वक्त श्रेष्ठ नहीं है, घरेलू परेशानी के कारण कारोबार में भी मन न लगेगा, यात्रा इस दौरान मंसूख कर दें तो बेहतर है, अन्य दिनों में हालात ठीक चलेंगे, कारोबार भी अच्छा रहेगा।
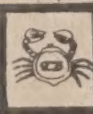
कर्क : अप्रैल १३ से वक्त बदलेगा और देर से चली आ रही परेशानी या कारोबार में घड़ी रुकावट दूर होगी और लाभ भी अच्छा होने लगेगा, परिवार से सुख, मित्रों से मिलाप।

सिंह : नातेदारों से मेल जोल, फिर भी परेशानी हर कदम पर पेश आवेगी, व्यर्थ का झगड़ा भी हो सकता है, घरेलू वातावरण भी उलझा सा रहेगा, हर प्रकार से चौकस रहें वर्ना हानि भी उठानी पड़ सकती है।

कन्या : सेहत की संभाल जरूरी है वर्ना हालत का बिगड़ सकती है, तेज़बुखार या मानसिक परेशानी कारण भी सिरदर्दी रह सकती है, वैसे कारोबार लिए सप्ताह काफी लाभदायक सिद्ध होगा।

तुला : मंगलवार तक का वक्त ठीक नहीं है, व्यर्थ समस्याओं का मन पर बोझ रहेगा, अधिकतर समस्या घरेलू झगड़े से ही पैदा होंगी, कारोबार ढीला हो चले परन्तु अन्य दिनों में कारोबार की हालत सुधरेगी।

वृश्चिक : कारोबार की स्थिति मध्यम ही रहे फिर भी आमदनी आशा अनुसार ही होगी परन्तु ख उम्मीद से ज्यादा ही होगा, किसी विशेष कार्य आरम्भ या समाप्ति, आर्थिक स्थिति में काफी परिवर्तन

धनु : किसी खास ही व्यक्ति के साथ मुलाकात हो फिर भी आप मानसिक तौर पर परेशान रहेंगे जिस कोई विशेष कारण न होगा, कारोबार तरक्की और अच्छी आमदनी प्राप्त होगी।

मकर : ठीक आमदनी होते हुए भी अधिक ख आपकी परेशानी का कारण बन सकते हैं, सरका कामों में सफलता, शत्रु मुंह की खायेंगे, व्यापार पह से अच्छा होगा, यात्रा सफल रहेगी।

कुम्भ : १२, १३ अप्रैल के रोज यात्रा स्थगित कर विशेषतः पहाड़ी क्षेत्रों पर सफर के लिए जाना खत से खाली नहीं है, कारोबार बिगड़ सकता है, अ दिनों में यात्रा ठीक रहेगी, व्यापार से अच्छा फायदा होगा

मीन : कुछ एक परेशानियां आपको चिन्ता में रखें परन्तु उनका समाधान शीघ्र हो जायेगा, अफसरों मेल, बन्धुजनों से कुछ परेशानी, स्वास्थ्य की अ विशेष ध्यान दें, चोट आदि लगने का डर हो जावेगा

(पृष्ठ ३३ से आगे)

विशाल जगत में दो दिन पूर्व मुक्त होकर मैं क्या करता? मुझे पहले से यह सूझा ही नहीं, वर्ना शुरू से ही बन्दीगृह के नियम तोड़ने लगता और 'आचरण बुरा' की चिट पा लेता।

अन्ततः मुक्ति का दुर्दिन उदय हुआ। मैंने सोचा बन्दीगृह के बाहर जाकर अपराध करने से तो यही अच्छा है कि यहीं मारपीट की जाय जिसेस मुआफी में छूटे हुए दिन तो वापिस ले ही लिए जायं, साथ ही कुछ और दिन का दण्ड भी मिले। बंदियों के लिए एक तलाब था। उसी में मैंने छलांग लगाई। चूंकि आत्महत्या का प्रयास सुपरिन्टेन्डेंट के सामने किया था, अतः अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता भी न थी। मेरा अनुभव था कि गवाहों के अभाव में अपराधी प्रमाणित होना बड़ा कठिन होजाता है। पर इतने में स्वयं सुपरिन्टेन्डेट ने कूदकर मुझे बाहर निकाला और बोला, 'अरे काकाजी! आप क्यों मर रहे थे? आज तो आपके छूटने का दिन है।'

'मरता नहीं था' मैं शांत स्वर में बोला, 'केवल आत्महत्या का प्रयत्न कर रहा था, क्योंकि इस अपराध में भी तो कत्ल करने के बराबर दण्ड मिलता है न?'

सुपरिन्टेडेन्ट ने सोचा कि मैं बड़ा विनोदशील हूं। हः हः करते हुए बोले, 'लगता है आपका पैर फिसल गया था आपको एक दिन और पहले छोड़ने का मुझे अधिकार है। अतः मैं तुम्हें आज ही छोड़ता हूं। सार्जेन्ट, आज के डिस्चार्ज में इनका नाम लिख देना।

अब मैं बन्दीगृह के बाहर हूं। आजकल सरकारी कर्मचारियों को वेतन के अतिरिक्त घर-भत्ता, मंहगाई, बम्बई भत्ता, मोटर भत्ता क्लीनर-भत्ता, क्लीनर के डस्टर के लिए भत्ता, इत्यादि के नाम पर पैसे मिलते हैं युद्ध के समय सेना के यूरोपीय सैनिकों को भी इसी प्रकार के मजेदार भत्ते मिलते थे जैसे विवाहित होने पर विवाह भत्ता और लड़ाई में जाने पर विरह-भत्ता। और बीस वर्ष पूर्व मेरे लिये पेन्शन की जो साढ़े सात रुपये की रकम निश्चित की गई थी, उसमें एक दमड़ी भी मंहगाई के युग में नहीं बढ़ाई गई थी। इसके विपरीत अब जेल-बर्ड होने के कारण वे साढ़े सात भी सरकार ने बन्द कर दिये गये थे चौबेजी छब्बे होने, रह गये दुब्बे ही।

तेज प्रेस नया बाजार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्ना लाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध संपादक विश्वबन्धु गुप्ता।